संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
अंक : १८८
अगस्त २००८

असामाजिक तत्त्वों द्वारा
गुरुपूर्णिमा के दिन
दर्शनार्थियों पर किये गये
हमले के कुछ दृश्य ।
इसकी VCD उपलब्ध है ।

संस्कृति के विरुद्ध षड्यंत्र

'जो हिन्दुओं को शांति के साथ नहीं रहने देना चाहते, उनके साथ किसी प्रकार की सहिष्णुता नहीं हो सकती । ऐसा समय आ गया है कि हिन्दू एक होकर सेवा तथा सहायता के साधनों को परिपुष्ट करें ।' – पं. मदनमोहन मालवीयजी का अंतिम संदेश

अनुक्रम

जीवन पथदर्शन 3
जीवन शक्ति का विकास 3
सत्संग महिमा 5
शोकनाशक उपदेश 5
उपासना अमृत 7
चतुर्मास का माहात्म्य 7
कथा-प्रसंग 9
घर-घर में बहे प्रेम की गंगा 9
विवेक जागृति 11
ईश्वरीय प्रसाद का आदर करें 11
आश्रम के विरुद्ध किये जा रहे कुप्रचार का पर्दाफाश 12
लेखक की कलम से 16
गुरुकुल मौत प्रकरण पर संतों के विचार 17
काव्य गुंजन 19
कुछ और बात होती 19
जब तक महापुरुष हैं हयात 20
संतो के सेवा कार्य भी तो दिखाये मीडिया 21
पावन संस्मरणीय उदगार 23
सुख-शांति व स्वास्थ्य का प्रसाद बाँटने के लिए ही बापू जी का अवतरण हुआ है। 23
हर व्यक्ति जो निराश है उसे आसाराम जी की ज़रूरत है 23
बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं 24
पुण्य संचय व ईश्वर की कृपा का फलः ब्रह्मज्ञान का दिव्य सत्संग 24
बापू जी का सान्निध्य गंगा के पावन प्रवाह जैसा है 24
पूज्यश्री के सत्संग में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के उदगार 26
......राष्ट्र उनका ऋणी है 27
गरीबों व पिछड़ों को ऊपर उठाने के कार्य चालू रहें 27

सराहनीय प्रयासों की सफलता के लिए बधाई ... 28
आपने दिव्य ज्ञान का प्रकाशपुंज प्रस्फुटित किया है ... 28
आप समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं ... 28
'योग व उच्च संस्कार शिक्षा हेतु' भारतवर्ष आपका चिरआभारी रहेगा ... 28
संतों के मार्गदर्शन में देश चलेगा तो आबाद होगा ... 29
सत्य का मार्ग कभी न छूटे ऐसा आशीर्वाद दो ... 29
भ्रामक प्रचार से बचें ... 29
आदत के गुलाम ... 33
स्वास्थ्य अमृत ... 34
आयुर्वेद का अनमोल उपहार " त्रिफला" ... 34
'नीम तेल' के बारे में किये जा रहे कुप्रचार का भंडाफोड़ ... 35
मेरा दृढ़ विश्वास है – वह अच्छे संस्कारी कुल में फिर से आयेगा ... 36
ये घटनाएँ बापू जी और आश्रम के खिलाफ साजिश हैं ... 37
प्रार्थनाष्टक ... 37
संस्था समाचार ... 38
संत श्री आसाराम जी आश्रम द्वारा किये जा रहे सेवाकार्यों की एक झलक ... 41

जीवन पथदर्शन

जीवन शक्ति का विकास

(गतांक से आगे)

संगीत का प्रभावः विश्व भर में सात्त्विक संगीतकार प्रायः दीर्घायुषी पाये जाते हैं। इसका रहस्य यह है कि सात्त्विक संगीत जीवन शक्ति को बढ़ाता है। कान द्वारा ऐसा संगीत सुनने से तो यह लाभ होता ही है अपितु किसी व्यक्ति के कान बंद करवा के उसके पास संगीत बजवाया जाये तो भी संगीत के स्वर, ध्वनि की तरंगे उसके शरीर को छूकर जीवनशक्ति को बढ़ाती हैं। इस प्रकार संगीत आरोग्यता के लिए भी लाभ दायी है।

जलप्रपात, झरनों की कल-कल, छल-छल मधुर ध्वनी से भी जीवनशक्ति का विकास होता है। पक्षियों के कलरव से भी प्राणशक्ति बढ़ती है।

हाँ, संगीत में एक अपवाद भी है। पाश्चात्य जगत में प्रसिद्ध रॉक संगीत (Rock Music) बजाने वाले और सुनने वाले की जीवनशक्ति क्षीण होती है। डॉ. डॉयमंड ने प्रयोगों से सिद्ध किया कि सामान्यतया हाथ का एक स्नायु 'डेल्टोइड' 40 से 45 कि.ग्रा. वजन उठा सकता है। जब रॉक संगीत बजता है तो उसकी क्षमता केवल 10 से 15 कि.ग्रा. वजन उठाने की रह जाती है। इस प्रकार रॉक संगीत से जीवनशक्ति का ह्रास होता है और अच्छे सात्त्विक, पवित्र संगीत की ध्वनि से तथा प्राकृतिक आवाजों से जीवनशक्ति का विकास होता है।

श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाया करते तो उसे सुनने वालों पर उसका क्या प्रभाव पड़ता था यह सुविदित है। श्रीकृष्ण जैसा संगीतज्ञ विश्व में और कोई नहीं हुआ। नारद जी भी वीणा और करताल के साथ हरि स्मरण किया करते थे। उन जैसा मनोवैज्ञानिक संत मिलना मुश्किल है। वे मनोविज्ञान की पढ़ाई करने स्कूल कॉलेजों में नहीं गये थे। मन को जीवनतत्व में विश्रान्ति दिलाने से मनोवैज्ञानिक योग्यताएँ अपने-आप विकसित होती हैं। श्री शंकराचार्य जी ने भी कहा हैः 'चित्त के प्रसाद से सारी योग्यताएँ विकसित होती हैं।'

प्रतीक का प्रभावः विभिन्न प्रतीकों का भी जीवनशक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। डॉ. डॉयमंड ने रोमन क्रॉम को देखने वाले व्यक्ति की जीवनशक्ति क्षीण होती पायी।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि स्वस्तिक समृद्धि व अच्छे भावी का सूचक है। उसके दर्शन से जीवनशक्ति बढ़ती है।

जर्मनी में हिटलर की नाजी पार्टी का निशान स्वस्तिक था। क्रूर हिटलर ने लाखों यहूदियों को मार डाला था। वह जब हार गया तो जिन यहूदियों की हत्या की जाने वाली थी वे सब मुक्त हो गये। तमाम यहूदियों का दिल हिटलर और उसकी नाजी पार्टी के लिए तीव्र घृणा से युक्त रहे यह स्वाभाविक है। उन दुष्टों का निशान देखते ही उनकी क्रूरता के दृश्य हृदय को कुरेदने लगें यह स्वाभाविक है। स्वस्तिक को देखते ही भय के कारण यहूदी की जीवनशक्ति क्षीण होनी चाहिए। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य के बावजूद भी डॉ. डायमंड के प्रयोगों ने बता दिया कि स्वस्तिक का दर्शन यहूदी की जीवनशक्ति को बढ़ाता है। स्वस्तिक का शक्तिवर्धक प्रभाव इतना प्रगाढ़ है।

स्वस्तिक के चित्र पर पलकें गिराये बिना, एकटक निहारते हुए त्राटक का अभ्यास करके जीवनशक्ति का विकास किया जा सकता है।

(अनुक्रम)

सत्संग महिमा

शोकनाशक उपदेश

भगवान राम जी को राज्य की जगह बनवास मिला। भरत जी अयोध्या आये। उन्होंने देखा कि कौसल्याजी बहुत विलाप कर रही हैं तो उन्होंने उनके पाँव पकड़ लिए और बोले कि "माँ ! तुम मेरी बात मानो। राम के राज्याभिषेक में विघ्न डालने के लिए कैकेयी ने जो कुछ किया है या दूसरी जो बाते हैं वे मैं बिल्कुल नहीं जानता हूँ। मेरा उनसे अँशमात्र भी संबंध नहीं है। मुझे सौ-सौ ब्रह्महत्याएँ करने का पाप हो, यदि मुझे उनकी कुछ जानकारी हो या उनमें मेरी कोई चेष्टा रही हो। अरुन्धती-वसिष्ठ को मारने से जो पाप लगेगा, वह पाप मुझे लगे।" ऐसी उन्होंने शपथ ली और रोने लग गये। कौसल्या ने उनको छाती से लगाया, बोलीं- "बेटा ! मैं जानती हूँ। इसके लिए शपथ लेने की ज़रूरत नहीं है। शोक मत करो।"

भरतजी आ गये हैं यह बात मालूम पड़ने पर वसिष्ठजी राजमंदिर में आये। भरत को रोते देखकर वसिष्ठजी सांत्वनाप्रद परमोच्च उपदेश देने लगेः

"देखो भरत ! राजा दशरथ बड़े-बूढ़े थे, ज्ञानी थेष उनका पराक्रम सत्य था। उन्होंने मर्त्यलोक में जितना सुख मिलता है सब भोगा और बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ देकर अश्वमेधादि बड़े-बड़े यज्ञ किये तथा उनको राम जैसा परमेश्वर पुत्र के रूप में प्राप्त हुआ। अंत में वे देवलोक में गये और उनको इन्द्र का अर्धासन मिला। तुम अब उनके लिए शोक मत करो। वे शोक करने योग्य नहीं हैं, वे तो मोक्ष के पात्र हैं।

यह शरीर अनित्य है और आत्मा नित्य है। शरीर का व्यय होता है और आत्मा का व्यय नहीं होता। शरीर अशुद्ध है और आत्मा शुद्ध है। शरीर का जन्म-मरण होता है, आत्मा का जन्म मरण नहीं होता। शरीर अत्यंत जड़ है, अतयंत अपवित्र है और अत्यंत विनश्वर है तथा आत्मा चेतन है, परम पवित्र है और अविनाशी है। यदि आत्मा और अनात्म इन दोनों के भेद का विचार किया जाये तो कहीं भी शोक का अवकाश नहीं है। कोई भी मरे, चाहे पिता मरे चाहे बेटा मरे – पिता व तनयो वापि यदि मृत्युवशं गतः – मनुष्य का जीवन है तो उसके सामने बाप भी मर सकता है और बेटा भी मर सकता है। यदि ऐसा हो जाये तो उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए। अपने आत्मा को ताड़ना नहीं देनी चाहिए। यह संसार निःसार है। यदि ज्ञानियों के जीवन में कोई वियोग का अवसर आता है तो उनका वैराग्य और बढ़ता है उनकी शांति और बढ़ती हैं, उनको और सुख मिलता है, वे निश्चिंत हो जाते हैं। संसार के व्यक्तियों और वस्तुओं का वियोग समझदारों को वैराग्य, शांति, सुख दे जाता है।

जो संसार में जन्म लेता है उसके पीछे मृत्यु लगी हुई है। इसलिए जिसका जन्म है उसकी मृत्यु अपरिहार्य है। स्वकर्मवशतः सर्वजन्तूनां प्रभवाप्ययौ – अपने-अपने कर्मों के अनुसार

सभी प्राणियों का जन्म और मरण होता है। जो समझदार हैं वह इस तरह संसार में क्यों शोक करेगा? अब तक करोड़-करोड़ ब्रह्मांड बने हैं और बिगड़ गये हैं – **ब्रह्माण्डकोटयो नष्टाः सृष्टयो बहुशो गताः** – न जाने कितनी सृष्टियाँ बदल गयी हैं, कितने ही समुद्र सूख चुके हैं। यह तो एक बुलबुला – क्षणमात्र का जीवन है, इसके लिए शोक करने का क्या कारण है?

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः।

जैसे पानी का बुलबुला पैदा हुआ तो मिटकर पानी में मिल जाना यह उसका स्वभाव है। यदि वह थोड़ी देर तक बना रहता है तो यह तो पानी का विकार है। तो पानी का विकार बुलबुले का होना और पानी का स्वभाव है बुलबुले का मिट जाना। इसलिए मरना स्वभाव है, जीना बिल्कुल विकार है, इसके लिए दुःखी होने का कोई कारण नहीं है। जैसे पीपल के पत्ते की पूँछ पर, उसकी नोक पर एक पानी की बूँद जाकर लटक गयी हो, अब गिरी-तब गिरी.... इसी प्रकार इस जीवन की स्थिति है।

आप तीन विभाग कर लो। संसार को देखनेवाला जीवात्मा, करोड़-करोड़ अनगिनत जीवात्माओं को देखने वाला एक परमेश्वर और उस परमेश्वर का प्रकाशक स्वयं प्रकाश साक्षात् परब्रह्म, जिसमें ईश्वर, जीव, जगत का कोई भेद नहीं है। वह अपना अनुभवस्वरूप है। वह आनंदस्वरूप है, बुद्धि आदि का साक्षी है। उसमें सृष्टि का उत्पत्ति-लय बिल्कुल नहीं है।

महावाक्य के द्वारा इसकी वृत्ति अंतःकरण में करायी जाती है और जब वह अज्ञान को मिटा देती है तो उसके साथ स्वयं मिट जाती है तथा आत्मा से अभिन्न परमात्मा ही रहता है। जो सबसे परे परमात्मा है वह एक ही है और अद्वितीय है, उसके सिवाय दूसरी कोई वस्तु नहीं है, वह सम है। इस प्रकार आत्मा का दृढ़ ज्ञान प्राप्त करे शोक छोड़ दो और पिता का क्रियाकर्म करो।"

जब गुरुजी ने ऐसा समझाया तो भरत जी ने अज्ञानजनित शोक छोड़ दिया और गुरु के बताये हुए ढंग से पिता की अंतक्रिया की।

गुरु अंतःकरण में ज्ञान-वृत्ति का सर्जन करते हैं, विभिन्न दृष्टान्तों एवं युक्तियों से उसे पुष्ट करते हैं, तथा अंत में अज्ञान का संहार कर ज्ञानवृत्ति को भी बाधित कर देते हैं। फिर निर्दुःख, निःशोक सहजावस्था में स्थिति हो जाती है। इसलिए शास्त्र कहते हैं-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुरविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

(अनुक्रम)

उपासना अमृत

चतुर्मास का माहात्म्य

'स्कन्द पुराण' के ब्रह्म खण्ड के अन्तर्गत 'चातुर्मास्य माहात्म्य' में आता हैः

सूर्य के कर्क राशि पर स्थित रहते हुए आषाढ़ शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक वर्षाकालीन इन चार महीनों में भगवान विष्णु शेषशय्या पर शयन करते हैं। श्री हरि की आराधना के लिए यह पवित्र समय है। सब तीर्थ, देवस्थान, दान और पुण्य चतुर्मास आने पर भगवान विष्णु की शरण लेकर स्थित होते हैं। जो मनुष्य चतुर्मास में नदी में स्नान करता है वह सिद्धि को प्राप्त होता है। तीर्थ में स्नान करने पर पापों का नाश होता है।

जो मनुष्य जल में तिल और आँवले का मिश्रण अथवा बिल्वपत्र डाल कर उस जल से स्नान करता है, उसमें दोष का लेषमात्र भी नहीं रह जाता। चतुर्मास में बाल्टी में एक दो बिल्वपत्र डालकर **ॐ नमः शिवाय** का 4-5 बार जप करके स्नान करें तो विशेष लाभ होता है। इससे वायुप्रकोप दूर होता है और स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

चतुर्मास में भगवान नारायण जल में शयन करते हैं, अतः जल में भगवान विष्णु के तेज का अंश व्याप्त रहता है। इसलिए उस तेज से युक्त जल का स्नान समस्त तीर्थों से भी अधिक फल देता है। ग्रहण के सिवाय के दिनों में संध्याकाल में और रात को स्नान न करें। गर्म जल से भी स्नान नहीं करना चाहिए।

चतुर्मास सब गुणों से युक्त उत्कृष्ट समय है, उसमें श्रद्धापूर्वक धर्म का अनुष्ठान करना चाहिए। यदि मनुष्य चतुर्मास में भक्तिपूर्वक योग के अभ्यास में तत्पर न हुआ तो निःसंदेह उसके हाथ से अमृत गिर गया। बुद्धिमान मनुष्य को सदैव मन को संयम में रखने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि मन के भलीभाँति वश में होने से ही पूर्णतः ज्ञान की प्राप्ति होती है।

परद्रव्य का अपहरण और परस्त्रीगमन आदि कर्म सदा सब मनुष्यों के लिए वर्जित है। चतुर्मास में इनसे विशेषरूप से बचना चाहिए।

चतुर्मास में जीवों पर दया करना विशेष धर्म है तथा अन्न जल व गौओं का दान, प्रतिदिन वेदपाठ और हवन – ये सब महान फल देने वाले हैं। अन्नदान सबसे उत्तम है। उसका न रात में निषेध है न दिन में। शत्रुओं को भी अन्न देना मना नहीं है।

चतुर्मास में धर्म का पालन, सत्पुरुषों की सेवा, संतों के दर्शन, सत्संग-श्रवण, भगवान विष्णु का पूजन और दान में अनुराग दुर्लभ माना गया है।

जो चतुर्मास में भगवान की प्रीति के लिए अपने प्रिय भोग का प्रयत्नपूर्वक त्याग करता है, उसकी त्यागी हुई वस्तुएँ उसे अक्षयरूप में प्राप्त होती हैं। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक प्रिय वस्तु का त्याग करता है वह अनंत फल का भागी होता है।

धातु के पात्रों का त्याग करके पलाश के पत्तों पर भोजन करने वाला मनुष्य ब्रह्मभाव को प्राप्त होता हैं। चतुर्मास में ताँबे के पात्र में भोजन करना विशेष रूप से त्याज्य है। चतुर्मास में काला और नीला वस्त्र पहनना हानिकारक है। इन दिनों में केशों को सँवारना(हजामत करवाना) त्याग दे तो वह मनुष्य तीनों तापों से रहित हो जाता है। इन चार महीनों में भूमि पर शयन, ब्रह्मचर्य का पालन, पत्तल में भोजन, उपवास, मौन, जप, ध्यान, दान-पुण्य आदि विशेष लाभप्रद हैं। चतुर्मास में परनिंदा का विशेषरूप से त्याग करें। परनिंदा को सुनने वाला भी पापी होता है।

परनिन्दा महापापं परनिन्दा महाभयम्।
परनिन्दा महद् दुःखं न तस्याः पातकं परम्।।

"परनिन्दा महान पाप है, परनिंदा महान भय है, परनिंदा महान दुःख है और परनिंदा से बढ़कर दूसरा कोई पातक नहीं है।"

(स्कं.पु.ब्रा.चा.मा. 4.25)

व्रतों में सबसे उत्तम व्रत है – ब्रह्मचर्य का पालन। ब्रह्मचर्य तपस्या का सार है और महान फल देने वाला है। इसलिए समस्त कर्मों में ब्रह्मचर्य बढ़ायें। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से उग्र तपस्या होती है। ब्रह्मचर्य से बढ़कर धर्म का उत्तम साधन दूसरा नहीं है। विशेषतः चतुर्मास में यह व्रत संसार में अधिक गुणकारक है, ऐसा जानो।

यदि धीर पुरुष चतुर्मास में नित्य परिमित अन्न का भोजन करता है तो वह सब पातकों का नाश करके वैकुंठ धाम को पाता है। चतुर्मास में केवल एक ही अन्न का भोजन करने वाला मनुष्य रोगी नहीं होता। जो मनुष्य चतुर्मास में प्रतिदिन एक समय भोजन करता है उसे 'द्वादशाह यज्ञ' का फल मिलता है। जो मनुष्य में चतुर्मास में केवल दूध पीकर अथवा फल खाकर रहता है, उसके सहस्रों पाप तत्काल विलीन हो जाते हैं।

पंद्रह दिन में एक दि संपूर्ण उपवास करें तो वह शरीर के दोषों को जला देता है और चौदह दिनों में भोजन का जो रस बना है उसे ओज में बदल देता है। इसलिए एकादशी के उपवास की महिमा है। वैसे तो गृहस्थ को महीने में केवल शुक्लपक्ष की एकादशी रखनी चाहिए किंतु चतुर्मास की तो दोनों पक्षों की एकादशियाँ रखनी चाहिए।

चतुर्मास में भगवान नारायण योगनिद्रा में शयन करते हैं इसलिए चार मास शादी-विवाह और सकाम यज्ञ नहीं होते। ये चार मास तपस्या करने के हैं।

(अनुक्रम)

कथा-प्रसंग

घर-घर में बहे प्रेम की गंगा

मेरठ (उ.प्र.) में रामनारायण व जयनारायण नाम के दो भाई रहते थे। उनकी एक छोटी बहन थी – प्रेमा। उनके माता-पिता स्वर्गवासी हो गये थे। बड़े भाई रामनारायण जमींदार थे और छोटे भाई जयनारायण वकील बन गये थे।

रामनारायण व प्रेमा सत्संग, कीर्तन, प्रभुभक्ति में रूचि रखते थे तथा जयनारायण पाश्चात्य जीवन शैली से प्रभावित थे। प्रेमा जब विवाह योग्य हुई तब दोनों भाई उसके लिए सुयोग्य वर खोजने लगे। रामनारायण धर्मनिष्ठ व सच्चरित्रवान वर खोजने लगे व जय नारायण अपने जैसी विचारधारा वाला वर तलाश करने लगे। इसी बात को लेकर दोनों भाइयों में मनमुटाव हो गया। जयनारायण ने घर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को लेकर दूसरे मोहल्ले में रहने लगे। रामनारायण ने प्रेमा का विवाह एक सच्चरित्र युवक के साथ कर दिया।

समय बीता। एक दिन प्रेमा ससुराल से अपने बड़े भाई के आयी हुई थी। एक शाम को वह झूला झूल रही थी कि जयनारायण किसी कार्यवश उधर से गुजरे। प्रेमा की जयनारायण की तरफ पीठ थी इसलिए वह भाई को नहीं देख पायी परन्तु उन्होंने बहन को देख लिया। वकील बाबू ने सुना कि प्रेमा गा रही हैः

भगीरथ की प्रभुप्रीति तपस्या,
गंगा धरती पे लायी।
घर-घर में बहे प्रेम की गंगा,
रहे न कोई दिल खाली।।
हर दिल बने मंदिर प्रभु का,
यदि गुरुज्ञान ज्योति जगा ली।
मेरे भैया दोनों नारायण,
मैं हूँ ईश्वर की लाडली।।

वकील बाबू ने सोचा, "जिसे मैंने भुला दिया था, वह मुझे अब भी स्मरण कर रही है।"

बात हृदय को चोट कर गयी। वे बहन और भाई के लिए तड़पने लगे। आखिर संस्कारी खानदान का खून रगों में था। अपनी भूल के लिए पश्चाताप करते हुए जयनारायण उदास रहने लगे। खाने-पीने से भी उनकी वृत्ति हट गयी। उद्विग्नता अत्यंत बढ़ने के कारण एक दिन उन्हें तेज बुखार हो गया।

एक हफ्ते बाद प्रेमा ने सुना कि जयनारायण बहुत बीमार हैं। वह बड़े भाई के कमरे में गयी और बोलीः "छोटे भैया बहुत बीमार हैं।"

"मुझे पता है तुम उससे मिलने जाना चाहती हो लेकिन प्रेमा ! वहाँ तुम्हें व्यर्थ ही अपमानित होना पड़ेगा यह पहले ही समझ लेना।"

"भैया ! मान-अपमान आया जाया करते हैं पर अपनी संस्कृति का 'हृदय की विशालता व मिल-जुलकर रहने का सिद्धान्त शाश्वत है। आप ही तो गाया करते हैं।

सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।

दिव्य जीवन हो हमारा यश 'तेरा' गाया करें।।

"शाबाश ! तुम्हारे विचारों की सुवास जयनारायण के घर को भी महकायेगी।"

जयनारायण के घर पहुँचकर प्रेमा ने देखा कि वे पलंग पर बेहोश पड़े हैं। एक ओर रमा भाभी खड़ी हैं व दूसरी ओर डॉक्टर खड़े हैं।

डॉक्टरः "इनके शरीर में रक्त की बहुत कमी हो गयी है, नसें तक दिखाई दे रही हैं।"

रमाः "कुछ भी खाते पीते नहीं हैं। कभी-कभी बस इतना ही कह उठते हैं – **मेरे भैया दोनों नारायण, मै हूँ ईश्वर की लाडली।।**

"यह सन्निपात का लक्षण है।"

"डॉक्टर साहब ! पास जो कुछ है सब ले लीजिए परन्तु इनके प्राण बचा लीजिए।"

"प्राण बचाना परमात्मा के हाथ में है। डॉक्टर का काम तत्काल कोशिश करना है। इन्हें तत्काल खून चढ़ाना पड़ेगा।"

"मेरा खून ले लीजिए।"

"आप गर्भवती हैं, आपका खून लेना ठीक नहीं।"

"डॉक्टर साहब ! मैं स्वस्थ हूँ, मेरा खून ले लीजिए !" – दरवाजे में खड़ी प्रेमा बोल उठी।

रमाः "नहीं प्रेमा ! आप रहने दीजिए।"

"क्यों भाभी?"

"हमने आपसे बहुत गल्त व्यवहार किया है। आपकी शादी में भी हमलोग शामिल नहीं हुए थे और एक पैसा भी हमने खर्च नहीं किया। आप हमसे नाराज नहीं हैं?"

"बहन का आदर्श यह नहीं है कि वह किसी भूल के कारण अपने भाई से सदा के लिए नाराज हो जाये। मेरे गुरुदेव कहते हैं-

बीत गयी सो बीत गयी,

तकदीर शिकवा कौन करे।

जो तीर कमान से निकल गया,

उस तीर का पीछा कौन करे।।"

डॉक्टर ने प्रेमा का ब्लॅड ग्रुप जाँचकर खून ले लिया और वकील साहब को चढ़ा दिया। एक हफ्ते में ही जयनारायण स्वस्थ हो गये। वे रामनारायण के घर आये। तब प्रेमा वहीं थी।

जयनारायण ने बड़े भाई के चरणों पर अपना सिर रख दिया व सिसक-सिसककर रोने लगे। रामनारायण ने उन्हें उठाया और छाती से लगा लिया। सभी की आँखों से प्रेमाश्रु बरसने लगे।

"भाई साहब ! मुझे क्षमा कर दीजिए। मुझे अपने घर में रहने की अनुमति दीजिए।"

"अनुमति?.... यह तुम्हारा ही घर है।"

"भैया ! आप पिता जी के समान हैं। आपने मुझे पढ़ाया-लिखाया, योग्य बनाया है और मैंने...."

"दुःखी मत होओ। सुबह का भूला शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते। तुम आज ही यहाँ आ जाओ।"

"प्रेमा ! मेरी हिम्मत नहीं होती कि तुम्हारी नज़र से नज़र मिला सकूँ। मैं भाई का आदर्श भूल गया परन्तु तुम बहन का आदर्श नहीं भूली।"

"हिन्दू संस्कृति व संतों के अनुसार बहन का जो आदर्श है, उसी का मैंने पालन किया है। यह तो मेरा कर्तव्य ही था। यदि तारीफ करनी ही है तो मेरी नहीं, अपनी संस्कृति व संतों की करो।"

दूसरे दिन जयनारायण अपनी पत्नी सहित उस घर में लौट आये। सत्संग के संस्कारों ने, संस्कृति के आदर्शों ने टूटे हुए दिलों को प्रेम की डोर से जोड़ दिया।

हे भारत की धरा ! हे ऋषिभूमि ! तेरे कण-कण में अभी भी कितने पावन संस्कार हैं ! हे भारत वासियो ! हे दिव्य संस्कृति के सपूतो ! आप अपने महापुरुषों के स्नेह के, हृदय की विशालता के संस्कारों को मत भूलो। ये संस्कार घर-घर में दिल-दिल में प्रेम की गंगा प्रकटाने का सामर्थ्य रखते हैं।

(अनुक्रम)

विवेक जागृति

ईश्वरीय प्रसाद का आदर करें

पूज्य बापू जी के सत्संग प्रवचन से

आपको दैवयोग से कोई ऊँचा पद मिल जाये, देव की दी हुई सिद्धि, देव का दिया हुआ प्रसाद, गुरुजनों का दिया हुआ प्रसाद-हार, उसका अगर आप आदर नहीं करते तो आपके यहाँ से वह चीज़ चली जाती हैं। गुरु की दी हुई कृपा, तेज, बल, प्रसन्नता का आदर नहीं किया तो चली जायेगी। देवदत्त, गुरुदत्त, ईश्वरदत्त प्रसाद का आदर करते हैं तो बढ़ता है, अगर कद्र नहीं करते तो नष्ट हो जाता है।

गंगा माँ ने जटाशंकर को एक कंगन प्रसाद में दिया था। जटाशंकर ने वह राजा को दे दिया, राजा ने रानी को दे दिया। रानी ने कंगर फैंक के शोक कर दिया कि 'एक कंगन से क्या, ऐसा दूसरा लाओ।' उसने कंगन फैंका तो वह चला गया, अदृश्य हो गया क्योंकि वह देवदत्त वस्तु थी तो देवदत्त चीज़ का आदर न करो तो खिसक जाती है।

गुरु भी दिखते शरीर में हैं लेकिन गुरु का आत्मदेव तो देव ही है न ! और गुरु के हृदय में देव हैं। अगर गुरु के हृदय को ठेस पहुँचायी और उस देव की उफ् आयी तो कहाँ पहुँचा देगी! कितने जन्मों में क्या कर दे ! उनकी दुआ काम कर लेती है, हजारों-लाखों का चित्त पावन कर देती है तो उनकी नाराज़ी भी तो काम करेगी ! छल, छिद्र, कपट से कोई गुरुजी को रिझा ले या गुरुजी को प्रसन्न करे ऐसा नहीं होता। हम कभी ऐसा व्यवहार नहीं करें कि हमारे गुरुजी नाराज हो जायें क्योंकि

गुरुकृपा ही केवलं शिष्यस्य परं मंगलम्।

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रततपः क्रियाः।

ताः सर्वाः सफला देवि गुरुसंतोषमात्रतः।।

आत्मरामी गुरु के हृदय में आपके व्यवहार से संतोष है तो आपके करोड़ों यज्ञ, करोड़ों जन्मों के तप, व्रत सबका फल गुरु की कृपा यूँ डाल देती है ! हमको उसी से तो मिला। कंगला मेहनत करके कब करोड़पति बनेगा? समझदार बच्चा तो करोड़पति की गोद में गया तो करोड़पति बन गया, ऐसे ही गुरुकृपा की झोली में चले जाते हैं तो उसी समय भगवत्प्रसाद !

(अनुक्रम)

आश्रम के विरुद्ध किये जा रहे कुप्रचार का पर्दाफाश

ऐसा कुप्रचार किया जा रहा है कि पूज्य संत श्री आसारामजी बापू 'वशीकरण विद्या' आजमाते हैं। आश्रम वशीकरण विद्या की बात को स्वीकार नहीं करता। जिस प्रकार कोयल अपनी मीठी वाणी से जगत को वश में कर लेता है, उसी प्रकार पूज्य बापू जी के श्रीमुख से प्रवाहित गीता, भागवत, रामायण, उपनिषद, षडदर्शन एवं वेदों के उपदेशों का अमृत जनमानस को उनके सत्संग में खींच लाता है। आभामंडल विशेषज्ञ डॉ. तापरला हीरा ने इस रहस्य का वैज्ञानिक प्रमाण खोजने के लिए पूज्ज श्री की आभा का अध्ययन करके बताया कि उनकी आभा इतनी शक्तिशाली और व्यापक है कि उसके दिव्य प्रभाव से लोग अपने आप उनकी ओर खिंचे चले आते

हैं। स्वामी विवेकानंद और रामतीर्थ जैसे महापुरुषों का व्यक्तित्व भी ऐसे भगवदीय आकर्षण से सम्पन्न था। श्री कृष्ण के बंसीनाद से प्रभावित होकर पशु-पक्षी, मानव सुध-बुध भूल के वशीभूत होकर उनकी ओर खिंचकर चले आते थे। पूज्य बापू जी के श्रीमुख से उन्हीं भगवान श्रीकृष्ण की गीता के सत्संग की जहाँ वर्षा होती हो, वहाँ लाखों-करोड़ों साधक-श्रद्धालु खिंचकर आयें तथा उसे कुप्रचार करने वाले वशीकरण कहते हों तो यह वशीकरण भारतीय संस्कृति का है, भगवान श्रीकृष्ण का है, महापुरुषों का है। ऐसे ज्ञानोपदेश के रसपान के जादू को रोकने हेतु पिछले पाँच हजार वर्षों में इस देश पर हीन वृत्ति के लोगों ने, विधर्मियों ने और विदेशी आक्रान्ताओं ने कई हमले किये परन्तु वे सफल नहीं हो पाये।

आश्रम के विरुद्ध कुप्रचार किया जा रहा है कि गुरुकुल के बालकों की बलि चढ़ायी गयी होगी। यह बात इतनी घृणास्पद व दुःखद है कि इससे भारत पर फैले हुए सैंकड़ों आश्रमों एवं करोड़ों साधकों व श्रद्धालुओं को आघात पहुँचा है। बापू जी के सत्संग में आने के बाद और दीक्षा लेने के बाद शिष्य-भक्त मांस, मछली व अंडे जैसे पदार्थ न खाने की प्रतिज्ञा लेते हैं और परम्परागत रूप से पशुबलि देने वाले कई समूहों को पशुबलि न चढ़ाने के लिये समझाया जाता है। ऐसे में बालकों की बलि की घृणास्पद बात फैलाने वाले आश्रम द्वारा चलाये जा रहे भारतीय सनातन संस्कृति के प्रचार प्रसार के यज्ञ में हड्डियाँ डालने जैसी प्रवृत्ति कर रहे हैं, जो कि धर्महित, देशहित, समाजहित और हमारी संस्कृति के हित के लिए बंद होनी चाहिए। दुनिया के सैंकड़ों देशों में लाखों लोगों की आकस्मिक मृत्यु होती है, फिर भी उस निमित्त को इतना विकृत रूप देकर मीडिया के द्वारा राजनैतिक अस्थिरता पैदा करना, निर्दोष जनता पर पथराव करना, गाड़ियाँ जलाना आदि किसी भी देश में नहीं होता।

भगवान श्रीकृष्ण को खत्म करने के लिए कंस मैदान में आ गया था, भगवान बुद्ध व महावीर को हैरान, परेशान, बदनाम करने के लिए उनके समकालीन निंदकों ने समस्त दाँव-पेंच अपनाये थे। जिन भी अवतारों, महापुरुषों ने वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व प्रहरी का काम किया है या समाज-सेवा, धर्म-सेवा एवं समाज सुधार का बिगुल फूँका है, उनकी लोकप्रियता से भयभीत होकर असमाजिक तत्त्वों ने उन्हें बदनाम करने में सताने में कोई कमी नहीं रखी। मंसूर को सूली पर चढ़ाया गया, जीसस को क्रॉस पर चढ़ाया गया, सुकरात को जहर दिया गया, मुहम्मद पैगंबर को मक्का से मदीना हिजरत करने के लिए विवश किया गया – इतिहास ऐसे सैंकड़ों दृष्टान्तों से भरा पड़ा है। ऐसे में पूज्य आसारामजी बापू, जिनके करोड़ों अनुयायी हैं, को बदनाम करने के लिए विभिन्न रूप से स्वार्थी तत्त्व मैदान में आये हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

व्यक्ति की देह से भी उसके ईश्वर, अपनी संस्कृति तथा धर्म के प्रति श्रद्धा अधिक कीमती है। आज यूरोप, अमेरिका व रशिया का श्रद्धाविहीन समाज विनाश की ओर धकेला जा रहा है। ऐसे समय में कठोर परिश्रम के बाद करोड़ों व्यक्तियों के हृदय में धर्म, संस्कृति और राष्ट्रहित के

लिए संतों द्वारा पैदा की हुई श्रद्धा को अपने अहंकार की पूर्ति के लिए, क्षुद्र स्वार्थ के लिए तोड़ना, यह लाखों मानवों की हत्या करने के समान माना जायेगा और ऐसा महापाप करने वाले तत्त्वों को ईश्वर माफ नहीं करते हैं – इतिहास साक्षी है।

आश्रम के भक्तजन बाल संस्कार केन्द्र चलाते हैं, संकीर्तन यात्राओं के द्वारा जनजागृति करते हैं, गरीबों में भंडारे के द्वारा उन्हें अनाज-कपड़े तथा जीवनावश्यक वस्तुओँ का वितरण करते हैं, युवाधन सुरक्षा अभियान चलाते हैं, मांसाहार का निषेध करते हैं। आश्रम के द्वारा ऐसी समाज कल्याण (social welfare) की सर्वहितकारी (public interest) की सेवा प्रवृत्तियाँ होती हैं। आश्रम के एक-एक कोने, एक-एक वृक्ष, एक-एक कमरे का उपयोग सभी जाति वालों के लिए खुला है।

आश्रम द्वारा साल में लाखों मरीजों की चिकित्सा सेवा की जाती है। लाखों पिछड़े लोगों, आदिवासियों, वंचितों, गरीबों, विधवाओँ अनाथों को भंडारों के द्वारा अन्न, वस्त्र, बर्तन आदि का दान किया जाता है। भारत भर में अनेक स्थानों पर लाखों लोगों को निःशुल्क अनाज-वितरण किया जाता है। आश्रम द्वारा 'पातंजल योगविज्ञान' अनुरूप अनेक तालिमबद्ध प्रशिक्षकों द्वारा सैंकड़ों शिविरों के माध्यम से विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया जा रहा है। बड़ी संख्या में विद्वान, वैज्ञानिक, न्यायाधीश, पत्रकार, सांसद, विधायक, मंत्री एवं देश का प्रबुद्ध वर्ग पूज्य बापूजी के सत्संग-मार्गदर्शन से लाभान्वित होकर अपने को धन्य कर रहा है।

भक्तों की विशाल संख्या को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष देश के सात स्थानों पर गुरुपुर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया था, ताकि लोगों को परिश्रम न पड़े। हर जगह पूज्य बापू जी द्वारा यह घोषणा की गयी कि 'चीज़-वस्तु, रुपया-पैसा, दान नहीं चाहिए।

तू तेरा उर आँगन दे दे, मैं अमृत की वर्षा कर दूँ।'

सभी पार्टियों के नगरसेवक, विधायक, सांसद और मंत्री बापू जी के सत्संग में आते हैं, बापू जी का आशीर्वाद पाते हैं और सफल हो जाते हैं। बापू जी के करोड़ों-करोड़ों श्रोता हैं। गुरुपूर्णिमा पर्व पर अपनी श्रद्धा-भक्ति अभिव्यक्त करने के लिये प्रत्येक स्थान में लाखों-लाखों श्रद्धालु भक्तों का मानव समूह उमड़ पड़ा था।

आश्रम के बारे में भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि आश्रम में तांत्रिक विद्या का प्रयोग होता है। इस बारे में स्पष्ट किया जाता है कि आश्रम में न तो तांत्रिक विद्या का प्रयोग किया जाता है और न ही उसे समर्थन या सहयोग दिया जाता है। वेदोक्त संयम तथा ब्रह्मचर्य का प्रचार किया जाता है। आश्रम ने गीता और वेदांत में प्रशस्त कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का मार्ग अपनाया है। आश्रम समाज और गरीब-गुरबों की सेवा द्वारा कर्मयोग, ध्यान द्वारा ज्ञानयोग, आत्मबोध और सर्वशक्तिमान एक ईश्वर की सम्पूर्ण शरणागति की साधना द्वारा भक्तियोग के प्रचार-प्रसार में रत है तथा सदाचरण द्वारा सर्वांगीण विकास के विचारों से ओतप्रोत है। इसका

प्रत्यक्ष प्रमाण पूज्य बापू जी के सत्संग है, जो एक खुली किताब है, जिसे गत अनेक वर्षों से आम जनता ऑडियो व विडियो माध्यमों से सुन व देख रही है।

पूज्य बापू जी ने केवल यूरोप, अमेरिका में ही नहीं, अपितु पाकिस्तान में भी भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहरायी है। वे पाकिस्तान के विभिन्न स्थानों में हजारों हिन्दुओं और मुसलमानों को बीच भारत की वैदिक परम्परा एवं संत-सूफी परम्परा की सत्संग-वर्षा करने वाले लोकसंत हैं। पाकिस्तान के हिन्दू-मुसलमान सभी ने उनका सत्संग पाकर धन्यता का अनुभव किया। सन् 1893 में शिकागो में 'विश्वधर्म संसद' में स्वामी विवेकानंदजी ने भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया था, उसी प्रकार बापू जी ने सन् 1993 में आयोजित 'विश्वधर्म संसद' में भारत का प्रतिनिधित्व करके समग्र विश्व में देश का गौरव बढ़ाया था।

उपर्युक्त परिस्थितियों में जब तक गुजरात एवं देश की आम जनता कुप्रचार से गुमराह हुए बिना, दूध का दूध और पानी का पानी करने के लिए कटिबद्ध ने हो, तब तक संतों को सताने, हमारी संस्कृति को मिटाने, हिन्दू-हिन्दू को लड़ाने के ये षडयंत्र चलते रहेंगे।

वाघेला परिवार के दो कुलदीपकों के आकस्मिक देहावसान से उनके परिजनों को जितना आघात लगा है, उतना ही आघात और दुःख बापू जी सहित समग्र आश्रम परिवार को हुआ है। इस सम्पूर्ण घटनाक्रम के विषय में जाँच चल रही है। आश्रम किसी भी न्यायिक जाँच के लिए पूरी तरह सहयोग देगा और किसी भी उच्चस्तरीय एजेन्सी द्वारा जाँच का स्वागत करता है तथा इस घटना को लेकर कोई टिप्पणी करके न्यायिक प्रक्रिया में अवरोधरूप नहीं बनना चाहता है।

आश्रम द्वारा पुलिस व प्रचार-माध्यमों के समक्ष पूरी पारदर्शिता रखते हुए पूरी जानकारियाँ एवं सहयोग दिया गया। पुलिस की जाँच-प्रक्रिया चालू है, निर्णय अभी तक घोषित नहीं हुआ। फिर भी संस्था को गुनहगार मानते हुए देश के कोने-कोने से आये हुए निर्दोष, भगवतप्रेमी भक्तजनों पर कुछ असमाजिक तत्त्वों ने अपने स्वार्थ के लिए किराये के गुंडे लाकर जिस तरह से पथराव, बेरहमी से मारपीट, बहनों के साथ बीभत्स व्यवहार किया, भक्तों के वाहन जलाये, उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता का हनन किया, उसकी हम कड़े-से-कड़े शब्दों में भर्त्सना करते हैं। निर्दोष, मासूम बालकों की चिताओं पर अपने क्षुद्र स्वार्थ की रोटियाँ सेंकने वालों के षडयंत्र की भी उच्चस्तरीय जाँच होनी चाहिए और दोषियों को कड़ी-से-कड़ी सजा दी जानी चाहिए।

पूज्य बापू जी ने कहा कि 'अमदावाद के लोग मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं। अमदावाद के लोग सज्जन व अच्छे हैं, उनको बदनाम नहीं होने दिया जाये। किराये के आदमी लाकर असमाजिक तत्त्वों द्वारा बदनियती से यह साजिश करायी गयी है। भगवान सबका मंगल करे। आप भी खुश रहें, सुखी रहें व दूसरों को भी खुश करें, सुखी रखें।

भक्त परिवार

(अनुक्रम)

लेखक की कलम से

आश्रम की जमीनों के बारे में कुछ समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं टी.वी. चैनलों द्वारा भ्रामक प्रचार किया जा रहा है। वास्तविकता यह है किः

दिल्ली में रीज आश्रम मनोकामनासिद्ध हनुमान मंदिर का ट्रस्ट बाबा बालकदासजी का बनाया हुआ था व हनुमान मंदिर उसी ट्रस्ट के अन्तर्गत चल रहा है। महाराज और बापूजी मित्र थे। बाद में विवादाग्रस्त भूमि कहकर मा. सर्वोच्च न्यायालय तक मामला चला और मा. सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से वहाँ आश्रम सत्प्रवृत्तियाँ कर रहा है। साधक, हजारों दर्शनार्थी उसी प्राचीन मंदिर का लाभ लेते हैं।

रजोकरी आश्रम की जमीन क्रेशरवालों व किसानों से खरीदी गयी है और रजोकरी गाँव के बच्चों को निःशुल्क पढ़ाया भी जाता है और पौष्टिक आहार भी दिया जाता है। गायों के लिए गौशाला भी है, जहाँ गायों की सेवा होती है। गौशाला, औषधालयों में चिकित्सा, स्कूल में निःशुल्क आहार व पढ़ाई – जैसे सेवाकार्यों को प्रकाशित करने के बदले विकृत ढंग से लिखकर समाज व प्रशासन को क्यों गुमराह किया जा रहा है? इस सेवायज्ञ में क्यों हड्डियाँ डालते हो? ऐसे सेवाकार्यों में कुप्रचार का जहर क्यों घोलते हो?

सूरत की जमीन कोई 80 करोड़, कोई 125 करोड़ की बता रहे हैं। यह 10-12 साल पहले सरकार ने आश्रम को दी थी। जमीन की मूल बाजार कीमत पर आठ वर्षों का 12 % ब्याज जोड़कर सरकार को पैसा जमा कराया गया था। भूमि समतल एवं विकास खर्च तथा सारे पक्के निर्माण कार्य – 1625 फुट लम्बी रिटेनिंग दीवाल, शिव मंदिर, हनुमान मंदिर, बाल संस्कार केन्द्र आदि के निर्माण के पश्चात हुई इस जमीन की बाजार कीमत मा. उच्च न्यायालय के निर्णय के पृष्ठ क्र. 47 पर 3 से 4 करोड़ बतायी गयी है। इससे कुप्रचार का भंडाफोड़ हो जाता है।

10-12 साल पहले की जमीन आज भी निर्माण सहित 4 करोड़ से अधिक की होना मुश्किल है और जमीनों के भाव तो बढ़ते रहते हैं। यह सम्पदा तो ट्रस्ट की है।

सभी सूरतवासियों के सेवा व पुण्य-प्रताप से सभी बम विफल हो गये, अप्रिय साजिश विफल गयी। सूरतवासियों की सेवा-भक्ति और पुण्यमयी प्रवृत्ति से सूरत बड़े घात से बच गया।

जहाँ सुमति वहाँ संपति नाना।
जहाँ कुमति वहाँ दुःख निधाना।।

छिन्दवाड़ा गुरुकुल शक्ति ट्रस्ट के अन्तर्गत है और वह शक्ति ट्रस्ट ज्ञानदा देवी का है और उसमें पुराने ट्रस्टी भी हैं। अपना तन-मन-धन अर्पित करके गुरुकुल चलाने वालों को धन्यवाद देना चाहिए, ऐसे लोगों की सराहना करनी चाहिए। बोर्ड की परीक्षा में 100 प्रतिशत परिणाम लाने वाले इस पिछड़े इलाके के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों व ट्रस्टियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

तन-मन-धन से सेवा करने वालों के बारे में आप भ्रामक प्रचार क्यों कर करते हैं ? क्यों प्रशासन और पब्लिक को परेशान करते हैं और सज्जनों का सेवा-उत्साह तोड़ते हैं? भ्रामक प्रचार करने से देश की शक्ति का ह्रास होता है। भ्रामक प्रचार की लपेट में प्रशासन और पब्लिक आये नहीं, यही सबके लिये हितकारी है।

पेढ़माला (गुजरात) का पथरीला पहाड़ (100-150 एकड़ जमीन) किसान से खरीदा हुआ है। उसके दस्तावेज हैं। थोड़ी सी भूमि में गायों की घास, गायों का वास और गरीबों की सेवा होती है।

सारी भूमि और निर्माण मिला के जो चीज़ 1-1.5 करोड़ की नहीं हो सकती, उसको अरबों रुपयों की सम्पत्ति लिखकर आप प्रशासन को और पब्लिक को क्यों उत्तेजित करते हो? सरकारी जन्त्री के हिसाब से दस्तावेज हुआ और पथरीले पहाड़ का इलाका सस्ता होता ही है, आज भी खुला पड़ा है। आश्रम मैनेजमैन्ट का कहना है कि अगर यह अरबों रुपये की सम्पत्ति है तो आप 1.5 करोड़ रुपये ले आओ, आपको यह सेवाकार्य हेतु अर्पित कर सकते हैं। गायों की, गरीबों की सेवा चलती रहे इस शर्त पर, अरबों-अरबों रुपये की जमीन जो आप कहते हैं, वह आप इस निर्माण सहित जो साधक परिवार के भी नाम पर है, वह आपको दे सकते हैं। केवल 1.5 करोड़ रुपये देकर अरबों-अरबों रुपये की जमीन ले लीजिये।

'अरबों रुपये की, अरबों रुपये की.... विवादित-विवादित...' न अरबों रुपये की है न विवादित है। विवाद बनाने वाले कहीं भी विवाद बना सकते हैं। पुनः प्रार्थना है कि भ्रामक प्रचार से प्रशासन व पब्लिक परेशान होती है। उनकी परेशानी का पाप क्यों लेते हैं?

सुशांत

(अनुक्रम)

गुरुकुल मौत प्रकरण पर संतों के विचार

अमदावाद (विशेष ब्यूरो)। संत श्री आसारामजी बापू के खिलाफ चल रहे षड्यंत्र के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए **काँची के कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जगदगुरु श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी ने कहाः** 'राजनीति से गड़बड़ हो रही है। यह जल्दी से जल्दी शांत हो।'

सनातन संस्कृति के आधारस्तंभ संत महापुरुषों को बार-बार आरोपित कर श्रद्धालू भक्तों की श्रद्धा को आहत करने के षड्यंत्रकारियों के कुप्रयासों को विफल करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए उन्होंने कहाः 'हम लोग बोल रहे हैं, कर रहे हैं, और ज्यादा करना है। सभी संत लोग शामिल होने के लिए प्रयास करके सभी जगह संतों द्वारा, गाँव-गाँव और नगर-नगर प्रचार-प्रसार होना अत्यंत आवश्यक है। **संघे शक्ति कलियुगे**। सब लोग मिलकर करना। सभी संत लोग,

महाराज लोग, सब लोग मिलकर काम करने से कुप्रचारक दुर्जन भयभीत होंगे। इसलिए सब लोग मिलने का प्रयास करना।'

'प्रेस की ताकत' के पत्रकार ने इस प्रकरण के बारे में स्थानीय संतों से बातचीत की तो **जगन्नाथ मंदिर, अमदावाद के महंत श्री रामेश्वरदास जी महाराज ने कहा कि** 'आसारामजी बापू की संस्था को बदनाम किया जा रहा है, यह तो गलत बात है। राजनीति करने वाले धर्म को भी बदनाम करते हैं, धार्मिक लोगों को भी बदनाम करते हैं तथा अपनी राजनीति करने के लिए देश की संस्कृति का पोषण करने वालों के लिए भी षड्यंत्र करते हैं।"

वहीं सुप्रसिद्ध स्वामीनारायण मंदिर, अमदावाद के श्री हरिहरानन्दजी, महाराज ने मीडिया के रोल के बारे में कहा कि 'हम तो इतना कहना चाहते हैं कि यह हिन्दू संस्कृति जो है, उसको नष्ट कर देने के लिए कुछ लोग ऐसे सब षड्यंत्र बनाते हैं। किसी का समाज में मान होता है तो वे देख नहीं पाते, ऐसे झूठे आरोप डालकर अर्थ का अनर्थ करते हैं। बाकी जो कर्तव्य जिनका है वे तो करते हैं। हकीकत, जो रीयल स्टोरी है, वह जब सामने आयेगी, उसके बाद आप छाप सकते हैं।"

गीता मंदिर, अमदावाद के श्री शिवानन्दजी सरस्वती ने 'प्रेस की ताकत' के पत्रकार को एक विशेष भेंट में कहा कि 'ये दंगा मचा रहे हैं, किसको जला रहे हैं? बस को जला रहे हैं। घाटा किसको है? किसको भोगना पड़ेगा? अपने आपको ही भोगना पड़ेगा। टैक्स लगेगा, ये लगेगा... सरकार किसकी है? अपनी ही है न! कोई भी सरकार हो, चाहे काँग्रेस हो, भाजपा हो, कोई भी हो लेकिन घाटा तो अपने को ही है। महँगाई बढ़ेगी। तो ऐसा पेपर पढ़ने वालों को सोचना चाहिए कि क्या सही है, क्या सही नहीं है। इसको ध्यान में रखें, फिर बात कहनी चाहिए। उसने तो दे दिया है लेकिन सही क्या है उसका इंतज़ार भी करना पड़ता है। देखना चाहिए, फिर उसकी खोज करो कि यह सही है-नहीं है और जो सही नहीं है उसका विरोध करो।"

जब 'प्रेस की ताकत' के पत्रकार राकेश अग्रवाल ने गीता मंदिर, अमदावाद के श्री भास्करानंदजी महाराज से उनके विचार जानने चाहे तो उन्होंने कहा कि 'जो दुर्घटना हुई, बच्चे मरे यह दुर्घटना कैसे भी हो सकती है। उसमें आश्रम का हाथ हो या न हो, मंदिर का इतना बवाल हुआ, तोड़-फोड़ हुई, हानि अपने हिन्दू-हिन्दू में ही....। यह बवाल एकदम गलत है, नहीं होना चाहिए क्योंकि इसमें राजनीति या फिर कोई दूसरी पार्टी का हाथ था, पूरा विश्वास है कि ऐसा ही था। मैं सब लोगों से कहना चाहता हूँ कि इस प्रकार अपने ही आप में ऐसे भ्रमित होकर किसी पर बहुत आरोप नहीं लगाना चाहिए और यह गलत ही बात है कि ये जो लोग भड़क रहे हैं, दंगा कर रहे हैं, रैली निकाल रहे हैं, धर्म के प्रति, आसारामजी के प्रति या आश्रम के प्रति यह बात सिद्ध नहीं हुई है कि आसारामजी बापू के साधकों ने मर्डर किया। यह निराधार बात जब सिद्ध हो जाये, उसके बाद ही किसी पर आरोप लगा सकते हैं।'

('प्रेस की ताकत' से साभार)

(अनुक्रम)

काव्य गुंजन

कुछ और बात होती

दोस्तो तुम प्रदर्शन करने आये,
सोचो क्या तुमने हासिल किय।
अगर तुम दर्शन करने आये होते,
तो शायद कुछ और बात होती।।
भाव-भंगिमा से लगता है द्वेषपूर्ण रोष,
व्याप्त था तुम्हारे शरीर में।
थोड़ा सा प्रेम लेकर आये होते,
तो कुछ और बात होती।।
समाज के प्रति फर्ज नहीं देता,
किसी को अभद्रता का अधिकार।
विघटनकारी शक्तियों के इशारों पर,
कठपुतलियों की तरह नाचते हो।
अपने विवेक के प्रखर कर पाते,
तो शायद कुछ और बात होती।।
कसूर तुम्हारा भी नहीं है शायद,
तुम्हारा धंधा है सनसनी फैलाना।
तथ्यों की जहमत को जानने की जहमत करते,
तो शायद कुछ और बात होती।।
नारायण को साधारण नर जाना,
मुजरिम समझ कर किया अपमाना।
लोक कल्याण में सहयोग कर पाते,
तो शायद कुछ और बात होती।।
ब्रह्मज्ञानी की अवमानना के बदले,
जाने प्रकृति कैसा कोप ढाये।
पड़ जाते सत्संग के चार छींटे,
तो शायद कुछ और बात होती।।

कोमलचित्त संत तुम्हारी उद्दंडता को भी,
अपने चित्त नहीं धरते।
तुम उनसे स्वयं क्षमा-प्रार्थना कर पाते,
तो शायद कुछ और बात होती।।
जानता हूँ तुम अपने वाक्-चातुर्य से,
हर बात काटने को हो आतुर।
बातें तुम्हारे हित की हैं यह जान पाते,
तो कुछ और बात होती।।

अशोक भाटिया

जब तक महापुरुष हैं हयात

बहुत दिनों की साजिश है,
स्थिति नहीं बनी अकस्मात।
भारत की संस्कृति पर नित्य हो रहा,
भीषण कुठाराघात।।
जयचन्द हर युग में होने का,
सिलसिला जारी है आज तक।
तोड़ो लोगों की धार्मिक श्रद्धा,
कुचल डालो उनके जज्बात।।
संत करते प्राणिमात्र की,
कुशलता के प्रयास दिन रात।
कृतज्ञ्न समाज डालता है,
उनकी झोली में लाँछनों की सौगात।।
ब्रह्मज्ञानी सदगुरु कभी-कभी,
अवतरित होते हैं धरती पर।
उनके सान्निध्य का लाभ ले लो,
जब तक महापुरुष हैं हयात।।
ब्रह्मवेत्ता महापुरुष बददुआ नहीं देंगे,
किंतु प्रकृति चुप नहीं रहेगी।
कहीं कोई ठौर नहीं मिलेगा तब,
आत्मा करेगी लानत की बरसात।।

अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा,
मेरी मानो तो क्षमा प्रार्थना कर लो।
वक्त चूक गया तो फिर,
भैया! मलते रह जाओगे खाली हाथ।।

अशोक भाटिया

(अनुक्रम)

संतो के सेवा कार्य भी तो दिखाये मीडिया

साध्वी ऋतम्भरा

भारत के संत समाज के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक बहुत ही सोचा समझा और नियोजित षडयंत्र रचा गया है। कभी कथित हत्या के आरोप तो कभी योग से विश्व भर को निरोगी करने के एक योगी के प्रयासों को झूठा सिद्ध करने एवं उनकी दवाओं में पशुओं की हड्डियाँ होने संबंधी आरोपों के कुत्सित समाचारों से चारों ओर सनसनी फैली हुई है। बहुत गहराई से विचार करने पर यही सत्य सामने आता है कि यह सब कुछ और नहीं, कोका कोला जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बोतलों से निकला वह जिन्न है जिसका बाबा रामदेवजी महाराज जैसे संतों ने पर्दाफाश किया है। उसके बाद जिस प्रकार कम से कम उस कोका कोला बनाम टायलेट क्लीनर की बिक्री को तगड़ा झटका लगा, उसके बाद यह तो तय ही था कि भारत के संत समाज के विरुद्ध कोई न कोई साजिश तो रची ही जायेगी।

मैं पत्रकारिता जगत का पूर्ण सम्मान करती हूँ, लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ होने के नाते उसकी अपनी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका भी है। मगर मैं पत्रकार जगत को पूछना चाहती हूँ कि जिस सजगता और सक्रियता से 'स्टिंग आप्रेशन' कर रहे हैं, काले और सफेद धन की पड़ताल कर रहे हैं, क्या उतनी ही सजगता के साथ आपके गुप्त कैमरों ने कभी उन दृश्यों को भी अपने स्टिंग आप्रेशन में कैद किया है जिनमें भारत के संत इस देश के वनवसियों, गिरिवासियों एवं वंचितों के उत्थान के प्रयास करते दिखायी देते हैं? क्या आपके कैमरों की लाईटें कभी वहाँ भी चमकती हैं जहाँ संतजन अपने सेवाकार्यों की रोशनी से गरीबी एवं विवशता के अँधेरों को मिटाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं?

मैं पूछना चाहती हूँ कि टेलिविज़न चैनलों से कि जिस तरह आप चौबीसों घंटे एक ऐसे स्टिंग आप्रेशन को बार-बार देश को दिखाते रहते हैं जिसकी सत्यता की जाँच होनी बाकी हो, क्या कभी आपने चौबीसों घंटे संतों के किसी चिकित्सालय में चल रहे निःशुल्क सेवाकार्यों का प्रसारण देशवासियों को दिखाया? क्या संतों के अथक परिश्रम से गढ़े गये वात्सल्य के उन

मंदिरों पर आपने कैमरों को केन्द्रित किया, जहाँ दिन रात विशुद्ध सेवाभाव से समाज के उपेक्षित एवं निराश्रित बचपन को सुसंस्कारित दिशा देने के प्रयास किये जा रहे हैं?

नहीं.... ऐसा कभी-कभी ही किया करते हैं आप लोग क्योंकि इसमें कोई सनसनी नहीं होती। कभी यदि यह दिखाया भी गया होगा तो कुछ मिनटों का वृत्तचित्र दिखाकर इतिश्री कर ली गयी होगी। मैं मीडिया पर दोषोरोपण नहीं कर रही हूँ कि कैसे सनसनी फैलाने के समाचारों का संकलन और दृश्यों का फिल्मांकन किया जाता है। मुझे आज भी वह भयानक रौंगटे खड़े कर देने वाला दृश्य स्मरण आता है जब दिल्ली में आरक्षण विरोधी एक छात्र के आत्मदाह का दृश्य मैंने टेलिविज़न पर समाचारों में देखा था – स्वयं पर पेट्रोल डालकर धू-धू करके जलता वह छात्र और उसके पीछे दौड़-दौड़कर उस दृश्य को फिल्माते चैनलों के कैमरामैन! कल्पना कीजिये कैसा क्रूरतम दृश्य था कि चार-पाँच लोग दौड़ कर जलते हुए उस असहाय छात्र को शूट कर रहे हैं लेकिन किसी के मन में भी यह दया नहीं आयी कि अपना कैमरा रखकर कहीं से बाल्टी भर पानी उड़ेलकर उसकी आग बुझाने का प्रयास किया जाय। मैं पूछना चाहती हूँ कि अगर वह छात्र उन छायाकारों में से किसी का बेटा या भाई होता तब भी क्या वह उसे जलता हुआ देखकर केवल तस्वीरें ही उतारता रहता? ऐसी भयावह एक्सलूसिव तस्वीरें दिखाकर आप देश को कहाँ ले जाना चाहते हैं?

आज विश्वगुरु बनने की ओर अग्रसर भारत के प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों, जिन्हें भारत का संत समाज आज भी सहेजे हुए है, को नष्ट करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। हिन्दुओं की सदाशयता (उदारता, सज्जनता) का लाभ उठाकर उनके मानबिन्दुओं पर हमला किया जा रहा है। कभी मुस्लिम अथवा ईसाई पंथों पर कोई टिप्पणी करके देखिये, उनके अनुयायी सड़कों पर उतर आयेंगे। मैं इलैक्ट्रॉनिक मीडियाकर्मीयों से निवदेन करती हूँ कि कभी किसी कटती हुई गाय का भी स्टिंग आप्रेशन कीजिये और उसे बार-बार अपने चैनलों पर दिखाइये। देश की जनता के बताइये कि वह जो गाय काटी जा रही है, उसका देश की अर्थव्यवस्था में कितना बड़ा योगदान था!

कभी स्टिंग आप्रेशन कीजिए उन मदरसों का, जहाँ मजहबी शिक्षा के नाम पर किस तरह से नयी पीढ़ी की रगों में नफरत का जहर भरा जा रहा है। उन घनघोर जंगलों और पहाड़ों में जाकर अपने स्टिंग आप्रेशन का जौहर दिखाइये जहाँ भूखे वनवासियों को मुट्ठी भर चावल देकर किस तरह से मतान्तरित किया जा रहा है। कभी अपने अत्याधुनिक कैमरों को सूदूर पूर्वोत्तर भारत के उन सुलगते प्रान्तों की ओर भी घुमाइये जहाँ अलगाववाद की आग भड़कायी जा रही है।

मैं निवेदन करना चाहती हूँ भारत के पत्रकार जगत से कि आप लोग अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत को बनाये रखने के लिए कटिबद्ध संत समाज को जनमानस से काट देने के कैसे कुत्सित और अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास किये जा रहे हैं! आप उन षडयन्त्रों का पीछा कीजिये जो

कोका कोला के जहर को उजागर करने वाले एक संत को रास्ते से हटाने के कथित मंसूबे पाले हुए हैं। सारे संत-समाज की छवि को नकारात्मक बनाया जाना अन्यायपूर्ण है और ऐसे प्रयासों को रोकने का उत्तरदायित्व भी मीडियाकर्मियों का ही है।

(अनुक्रम)

पावन संस्मरणीय उदगार

सुख-शांति व स्वास्थ्य का प्रसाद बाँटने के लिए ही बापू जी का अवतरण हुआ है।

"मेरे अत्यन्त प्रिय मित्र श्री आसाराम जी बापू से मैं पूर्वकाल से हृदयपूर्वक परिचित हूँ। संसार में सुखी रहने के लिए समस्त जनता को शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक शांति दोनों आवश्यक हैं। सुख-शांति व स्वास्थ्य का प्रसाद बाँटने के लिए ही इन संत का, महापुरुष का अवतरण हुआ है। आज के संतों-महापुरुषों में प्रमुख मेरे प्रिय मित्र बापूजी हमारे भारत देश के, हिन्दू जनता के, आम जनता के, विश्ववासियों के उद्धार के लिए रात-दिन घूम-घूमकर सत्संग, भजन, कीर्तन आदि द्वारा सभी विषयों पर मार्गदर्शन दे रहें हैं। अभी मे गले में थोड़ी तकलीफ है तो उन्होंने तुरन्त मुझे दवा बताई। इस प्रकार सबके स्वास्थ्य और मानसिक शांति, दोनों के लिए उनका जीवन समर्पित है। वे धनभागी हैं जो लोगों को बापूजी के सत्संग व सान्निध्य में लाने का दैवी कार्य करते हैं।"

काँची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य जगदगुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज।

हर व्यक्ति जो निराश है उसे आसाराम जी की ज़रूरत है

"श्रद्धेय-वंदनीय जिनके दर्शन से कोटि-कोटि जनों के आत्मा को शांति मिली है व हृदय उन्नत हुआ है, ऐसे महामनीषि संत श्री आसारामजी के दर्शन करके आज मैं कृतार्थ हुआ। जिस महापुरुष ने, जिस महामानव ने, जिस दिव्य चेतना से संपन्न पुरुष ने इस धरा पर धर्म, संस्कृति, अध्यात्म और भारत की उदात्त परंपराओं को पूरी ऊर्जा (शक्ति) से स्थापित किया है, उस महापुरुष के मैं दर्शन न करूँ ऐसा तो हो ही नहीं सकता। इसलिए मैं स्वयं यहाँ आकर अपने-आपको धन्य और कृतार्थ महसूस कर रहा हूँ। मेरे प्रति इनका जो स्नेह है यह तो मुझ पर इनका आशीर्वाद है और बड़ों का स्नेह तो हमेशा रहता ही है छोटों के प्रति। यहाँ पर मैं आशीर्वाद लेने के लिए आया हूँ।

मैं समझता हूँ कि जीवन में लगभग हर व्यक्ति निराश है और उसको आसारामजी की ज़रूरत है। देश यदि ऊँचा उठेगा, समृद्ध बनेगा, विकसित होगा तो अपनी प्राचीन परंपराओं, नैतिक मूल्यों और आदर्शों से ही होगा और वह आदर्शों, नैतिक मूल्यों, प्राचीन सभ्यता, धर्म-

दर्शन और संस्कृति का जो जागरण है, वह आशाओ के राम बनने से ही होगा। इसलिए श्रद्धेय, वंदनीय महाराज श्री 'आसाराम जी' की सारी दुनिया को जरूरत है। बापू जी के चरणों में प्रार्थना करते हुए कि आप दिशा देते रहना, राह दिखाते रहना, हम भी आपके पीछे-पीछे चलते रहेंगे और एक दिन मंजिल मिलेगी ही, पुनः आपके चरणों में वंदन!"

प्रसिद्ध योगाचार्य श्री रामदेव जी महाराज।

बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं

"परम पूज्य बापू के दर्शन करके मैं पहले भी आ चुका हूँ। दर्शन करके '**दिने-दिने नवं-नवं प्रतिक्षण वर्धनाम्**' अर्थात बापू नित्य नवीन, नित्य वर्धनीय आनंदस्वरूप हैं, ऐसा अनुभव हो रहा है और यह स्वाभाविक ही है। पूज्य बापू जी को प्रणाम!"

सुप्रसिद्ध कथाकार संत श्री मोरारी बापू।

पुण्य संचय व ईश्वर की कृपा का फलः ब्रह्मज्ञान का दिव्य सत्संग

"ईश्वर की कृपा होती है तो मनुष्य जन्म मिलता है। ईश्वर की अतिशय कृपा होती है तो मुमुक्षत्व का उदय होता है परन्तु जब अपने पूर्वजन्मों के पुण्य इकट्ठे होते हैं और ईश्वर की परम कृपा होती है तब ऐसा ब्रह्मज्ञान का दिव्य सत्संग सुनने को मिलता है, जैसा पूज्यपाद बापूजी के श्रीमुख से आपको यहाँ सुनने को मिल रहा है।"

प्रसिद्ध कथाकार सुश्री कनकेश्वरी देवी।

बापू जी का सान्निध्य गंगा के पावन प्रवाह जैसा है

"कल-कल करती इस भागीरथी की धवल धारा के किनारे पर पूज्य बापू जी के सान्निध्य में बैठकर मैं बड़ा ही आह्लादित व प्रमुदित हूँ... आनंदित हूँ... रोमाँचित हूँ...

गंगा भारत की सुषुम्ना नाड़ी है। गंगा भारत की संजीवनी है। श्री विष्णुजी के चरणों से निकलकर ब्रह्माजी के कमण्डलु व जटाधर के माथे पर शोभायमान गंगा त्रैयोगसिद्धिकारक है। विष्णुजी के चरणों से निकली गंगा भक्तियोग की प्रतीति कराती है और शिवजी के मस्तक पर स्थित गंगा ज्ञानयोग की उच्चतर भूमिका पर आरूढ़ होने की खबर देती है। मुझे ऐसा लग रहा है कि आज बापूजी के प्रवचनों को सुनकर मैं गंगा में गोता लगा रहा हूँ क्योंकि उनका प्रवचन, उनका सान्निध्य गंगा के पावन प्रवाह जैसा है।

वे अलमस्त फकीर हैं। वे बड़े सरल और सहज हैं। वे जितने ही ऊपर से सरल हैं, उतने ही अंतर में गूढ़ हैं। उनमें हिमालय जैसी उच्चता, पवित्रता, श्रेष्ठता है और सागरतल जैसी

गम्भीरता है। वे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। उन्हें देखकर ऋषि-परम्परा का बोध होता है। गौतम, कणाद, जैमिनि, कपिल, दादू, मीरा, कबीर, रैदास आदि सब कभी-कभी उनमें दिखते हैं।

रे भाई! कोई सत्गुरु संत कहावे, जो नैनन अलख लखावे।
धरती उखाड़े, आकाश उखाड़े, अधर मड़इया धावे।
शून्य शिखर के पार शिला पर, आसन अचल जमावे।।
रे भाई! कोई सत्गुरु संत कहावे.....

ऐसे पावन सान्निध्य में हम बैठे हैं जो बड़ा दुर्लभ व सहज योगस्वरूप है। ऐसे महापुरुष के लिए पंक्तियाँ याद आ रही हैं- तुम चलो तो चले धरती, चले अंबर, चले दुनिया...

ऐसे महापुरुष चलते हैं तो उनके लिए सूर्य, चंद्र, तारे, ग्रह, नक्षत्र आदि सब अनुकूल हो जाते हैं। ऐसे इन्द्रियातीत, गुणातीत, भावातीत, शब्दातीत और सब अवस्थाओं से परे किन्हीं महापुरुष के श्रीचरणों में जब बैठते हैं तो .... भागवत कहता हैः साधुनां दर्शनं लोके सर्वसिद्धिकरं परम्। साधुओं के दर्शनमात्र से विचार, विभूति, विद्वता, शक्ति, सहजता, निर्विषयता, प्रसन्नता, सिद्धियाँ व आत्मानंद की प्राप्ति होती है।

देश के महान संत यहाँ सहज ही आते हैं, भारत के सभी शंकराचार्य भी आते हैं। मेरे मन में भी विचार आया कि जहाँ सब आते हैं, वहाँ जाना चाहिए क्योंकि यही वह ठौर-ठिकाना है, जहाँ मन का अभिमान मिटाया जा सकता है। ऐसे महापुरुषों के दर्शन से केवल आनंद व मस्ती ही नहीं बल्कि वह सब कुछ मिल जाता है जो अभिलषित है, आकांक्षित है, लक्षित है। यहाँ मैं करुणा, कर्मठता, विवेक-वैराग्य व ज्ञान के दर्शन कर रहा हूँ। वैराग्य और भक्ति के रक्षण, पोषण व संवर्धन क लिए यह सप्तऋषियों का उत्तम ज्ञान जाना जाता है। आज गंगा अगर फिर से साकार दिख रही है तो वे बापू जी के विचार व वाणी में दिख रही है। अलमस्तता, सहजता, उच्चता, श्रेष्ठता, पवित्रता, तीर्थ-सी शुचिता, शिशु-सी सरलता, तरुणों-सा जोश, वृद्धों-सा गांभीर्य और ऋषियों जैसा ज्ञानावबोध मुझे जहाँ हो रहा है, वह पंडाल है। इसे आनंदगर कहूँ या प्रेमनगर? करुणा का सागर कहूँ या विचारों का समन्दर?... लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि मेरे मन का कोना-कोना आह्लादित हो रहा है। आपलोग बड़भागी है जो ऐसे महापुरुष के श्रीचरणों में बैठे हैं, जहाँ भाग्य का, दिव्य व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जीवन की कृतकृत्यता जहाँ प्राप्त हो सकती है वह यही दर है।

मिले तुम मिली मंजिल, मिला मकसद और मुद्दा भी।
न मिले तुम तो रह गया मुद्दा, मकसद और मंजिल भी।।

आपका यह भावराज्य व प्रेमराज्य देखकर मैं चकित भी हूँ और आनंद का भी अनुभव कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि बापू जी सबके आत्मसूर्य हैं। आपके प्रति मेरा विश्वास व अटूट निष्ठा बढ़े इस हेतु मेरा नमन स्वीकार करें।"

स्वामी अवधेशानंदजी महाराज, हरिद्वार।

पूज्यश्री के सत्संग में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी के उदगार

"पूज्य बापूजी के भक्तिरस में डूबे हुए श्रोता भाई-बहनों! मैं यहाँ पर पूज्य बापूजी का अभिनंदन करने आया हूँ.... उनका आशीर्वचन सुनने आया हूँ.... भाषण देने य बकबक करने नहीं आया हूँ। बकबक तो हम करते रहते हैं। बापू जी का जैसा प्रवचन है, कथा-अमृत है, उस तक पहुँचने के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। मैंने पहले उनके दर्शन पानीपत में किये थे। वहाँ पर रात को पानीपत में पुण्य प्रवचन समाप्त होते ही बापूजी कुटीर में जा रहे थे.. तब उन्होंने मुझे बुलाया। मैं भी उनके दर्शन और आशीर्वाद के लिए लालायित था। संत-महात्माओं के दर्शन तभी होते हैं, उनका सान्निध्य तभी मिलता है जब कोई पुण्य जागृत होता है।

इस जन्म में मैंने कोई पुण्य किया हो इसका मेरे पास कोई हिसाब तो नहीं है किंतु जरुर यह पूर्व जन्म के पुण्यों का फल है जो बापू जी के दर्शन हुए। उस दिन बापूजी ने जो कहा, वह अभी तक मेरे हृदय-पटल पर अंकित हैं। देशभर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है, जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्जवल भविष्य का सपना देख रहे हैं... उस सपने को साकार करने की शक्ति-भक्ति एकत्र कर रहे हैं।

पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शिक्षा दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे में भेद करना सिखा रहे हैं।

हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और हम जिसे लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापू जी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं। बापूजी ने कहा कि ईश्वर की कृपा से कण-कण में व्याप्त एक महान शक्ति के प्रभाव से जो कुछ घटित होता है, उसकी छानबीन और उस पर अनुसंधान करना चाहिए।

पूज्य बापूजी ने कहा कि जीवन के व्यापार में से थोड़ा समय निकाल कर सत्संग में आना चाहिए। पूज्य बापूजी उज्जैन में थे तब मेरी जाने की बहुत इच्छा थी लेकिन कहते हैं न, कि दाने-दाने पर खाने वाले की मोहर होती है, वैसे ही संत-दर्शन के लिए भी कोई मुहूर्त होता है। आज यह मुहूर्त आ गया है। यह मेरा क्षेत्र है। पूज्य बापू जी ने चुनाव जीतने का तरीका भी बता दिया है।

आज देश की दशा ठीक नहीं है। बापू जी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है। हाल में हुए लोकसभा अधिवेशन के कारण थोड़ी-बहुत निराशा हुई थी किन्तु रात को लखनऊ में पुण्य प्रवचन सुनते ही वह निराशा भी आज दूर हो गयी। बापू जी ने मानव जीवन के चरम लक्ष्य मुक्ति-शक्ति की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ चतुष्टय, भक्ति के लिए समर्पण की भावना तथा ज्ञान, भक्ति

और कर्म तीनों का उल्लेख किया है। भक्ति में अहंकार का कोई स्थान नहीं है। ज्ञान अभिमान पैदा करता है। भक्ति में पूर्ण समर्पण होता है। 13 दिन के शासनकाल के बाद मैंने कहाः "मेरा जो कुछ है, तेरा है।" यह तो बापू जी की कृपा है कि श्रोता को वक्ता बना दिया और वक्ता को नीचे से ऊपर चढ़ा दिया। जहाँ तक ऊपर चढ़ाया है वहाँ तक ऊपर बना रहूँ इसकी चिंता भी बापू जी को करनी पड़ेगी।

राजनीति की राह बड़ी रपटीली है। जब नेता गिरता है तो यह नहीं कहता कि मैं गिर गया बल्कि कहता हैः "हर हर गंगे।" बापू जी का प्रवचन सुनकर बड़ा आनंद आया। मैं लोकसभा का सदस्य होने के नाते अपनी ओर से एवं लखनऊ की जनता की ओर से बापू जी के चरणों में विनम्र होकर नमन करना चाहता हूँ।

उनका आशीर्वाद हमें मिलता रहे, उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरन्तर चलते हुए परम वैभव को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।"

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री, भारत सरकार।

परम पूज्य बापू संत श्री आसारामजी बापू के कृपा-प्रसाद से परिप्लावित हृदयों के उदगार

......राष्ट्र उनका ऋणी है

भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर, दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती पार्क में 25 जुलाई 1999 को बापू जी की अमृतवाणी का रसास्वादन करने के पश्चात बोलेः

"आज पूज्य बापू जी की दिव्य वाणी का लाभ लेकर मैं धन्य हो गया। संतों की वाणी ने हर युग में नया संदेश दिया है, नयी प्रेरणा जगायी है। कलह, विद्रोह और द्वेष से ग्रस्त वर्तमान वातावरण में बापू जिस तरह सत्य, करुणा और संवेदनशीलता के संदेश का प्रसार कर रहे हैं, इसके लिए राष्ट्र उनका ऋणी है।"

(श्री चन्द्रशेखर, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार।)

गरीबों व पिछड़ों को ऊपर उठाने के कार्य चालू रहें

"गरीबों और पिछड़ों को ऊपर उठाने का कार्य आश्रम द्वारा चलाये जा रहे हैं, मुझे प्रसन्नता है। मानव-कल्याण के लिए, विशेषतः, प्रेम व भाईचारे के संदेश के माध्यम से किये जा रहे विभिन्न आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रयास समाज की उन्नति के लिए सराहनीय हैं।"

डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र।

सराहनीय प्रयासों की सफलता के लिए बधाई

"मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि 'संत श्री आसारामजी आश्रम न्यास' जन-जन में शांति, अहिंसा और भ्रातृत्व का संदेश पहुँचाने के लिए देश भर में सत्संग का आयोजन कर रहा है। उसके सराहनीय प्रयासों की सफलता के लिए मैं बधाई देता हूँ।"

श्री के. आर. नारायणन्, तत्कालीन राष्ट्रपति, भारत गणतंत्र, नई दिल्ली।

आपने दिव्य ज्ञान का प्रकाशपुंज प्रस्फुटित किया है

"आध्यात्मिक चेतना जागृत और विकसित करने हेतु भारतीय एवं वैश्विक समाज में दिव्य ज्ञान का जो प्रकाशपुंज आपने प्रस्फुटित किया है, संपूर्ण मानवता उससे आलोकित है। मूढ़ता, जड़ता, द्वंद्व और त्रितापों से ग्रस्त इस समाज में व्याप्त अनास्था तथा नास्तिकता का तिमिर समाप्त कर आस्था, संयम, संतोष और समाधान का जो आलोक आपने बिखेरा है, संपूर्ण समाज उसके लिए कृतज्ञ है।"

श्री कमलनाथ, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, भारत सरकार।

आप समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं

"आज के भागदौड़ भरे स्पर्धात्मक युग में लुप्तप्राय-सी हो रही आत्मिक शांति का आपश्री मानवमात्र को सहज में अनुभव करा रहे हैं। आप आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं व उसमें धार्मिक एवं नैतिक आस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं।

श्री कपिल सिब्बल, विज्ञान व प्रौद्योगिकी तथा महासागर विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार।

'योग व उच्च संस्कार शिक्षा हेतु' भारतवर्ष आपका चिरआभारी रहेगा

"देश विदेश में भारतीय संस्कृति की ज्ञानगंगाधारा बच्चे-बच्चे के दिल-दिमाग में बापू जी के निर्देश पर परिचालित होना शुभंकर है। विद्यार्थियों में संस्कार सिंचन द्वारा हमारी संस्कृति और नैतिक शिक्षा सुदृढ़ बन जायेगी। देश को संस्कारित बनाने के लिए चलाये जाने वाले 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा' कार्यक्रम हेतु भारतवर्ष आप जैसे महात्माओं का चिरआभारी रहेगा।"

श्री चन्द्रशेखर साहू, ग्रामीण विकास राज्यमन्त्री, भारत सरकार।

संतों के मार्गदर्शन में देश चलेगा तो आबाद होगा

"पूज्य बापू जी में कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग तीनों का ही समावेश है। आप आज करोड़ों-करोड़ों भक्तों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। संतों के मार्गदर्शन में देश चलेगा तो आबाद होगा। मैं तो बड़े-बड़े नेताओं से यही कहता हूँ कि आप संतों का आशीर्वाद जरूर लो। इनके चरणों में अगर रहेंगे तो सत्ता रहेगी, टिकेगी तथा उसी से धर्म की स्थापना होगी।"

श्री अशोक सिंघल, अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद।

सत्य का मार्ग कभी न छूटे ऐसा आशीर्वाद दो

"हमें आपके मार्गदर्शन की जरूरत है, वह सतत मिलता रहे। आपने हमारे कंधों पर जो जवाबदारी दी है उसे हम भली प्रकार निभायें। बुरे मार्ग पर न जायें, सत्य के मार्ग पर चलें। लोगों की अच्छे ढंग से सेवा करें। संस्कृति की सेवा करें। सत्य का मार्ग कभी न छूटे, ऐसा आशीर्वाद दो।"

श्री उद्धव ठाकरे, कार्यकारी अध्यक्ष, शिवसेना।

(अनुक्रम)

भ्रामक प्रचार से बचें

भारत की धरती सदा ही इस बात की साक्षी रही है और रहेगी कि यहाँ कभी भी महापुरुषों का अकाल नहीं रहा। वर्तमान भारत की एक देदीप्यमान संपदा 'संत श्री आसारामजी बापू' पिछले 45 वर्षों से पूरे देश में घूम-घूमकर आध्यात्मिक जागृति पैदा कर रहे हैं। उनका जीवन करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणादायक रहा है। उनकी प्रेरणा से पूरे भारत में 1200 योग वेदान्त सेवा समितियाँ, 300 आश्रम, 18000 बाल संस्कार केन्द्र, गौ-सेवा केन्द्र, नशामुक्ति अभियान, जेल सुधार अभियान, आदिवासी निराश्रित आधार योजना (अन्न, वस्त्र वितरण कार्यक्रम) निर्बाध रूप से चल रहे हैं। आज देश-विदेश में बापूजी के शिष्यों की संख्या करोड़ों में है और उनके श्रोताओं की संख्या उससे भी कई गुणा अधिक। भारत की गुरु-शिष्य परम्परा के पुनर्स्थापन में भी उनका मुख्य योगदान रहा है। ऐसे महापुरुषों की गरिमा, ऊँचाई से कुछ लोगों का दुःखी होना कोई नई बात नहीं है।

महापुरुषों पर आरोप कोई नयी बात नहीं है। परम पूज्य बापू जी के बारे में झूठा प्रचार किया जा रहा है कि वे पूर्वजीवन में एक साइकिल मेकैनिक थे। कुप्रचारों को झूठ को प्रसारित करने का कोई अधिकार नहीं है। सन् 1941 में जन्में पूज्य बापू जी का परिवार भारत विभाजन

(सन् 1947) के बाद बेराणी गाँव (सिंध प्रांत) से अमदावाद आकर बस गया। अपनी छोटी उम्र में ही उनकी शिक्षा छूट गयी और केवल तीसरी कक्षा तक ही मणिनगर के स्कूल में पढ़ सके। कुछ समय तक उन्होंने अपने बड़े भाई जेठामल के साथ गुड़-शक्कर की दुकान पर काम किया और कुछ समय अपने रिश्तेदारों के यहाँ भी काम किया परंतु उनका मन ईश्वर, सत्य की खोज में खोया रहा। उनकी यात्रा माउंट आबू की नल गुफा, केदारनाथ, हरिद्वार, वृन्दावनधाम से होती हुई नैनीताल के जंगलों में श्री लीलाशाह जी के चरणों में जाकर पूरी हुई। सिद्धपुर में उनकी साधना की सिद्धियाँ प्रकाश में आने लगीं और लोग उनको मानने लगे। 22 वर्ष की आयु (सन् 1962) में उन्हें ईश्वर की प्राप्ति हुई, उस समय वे अपने सदगुरु के श्री चरणों में मुंबई से कुछ दूर वज्रेश्वरी में थे। अपने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए उन्होंने सत्संग-प्रवचन के द्वारा लोगों को ईश्वरोन्मुख करने तथा उनके तन को तन्दुरुस्त, मन को प्रसन्न एवं उनकी बुद्धि में बुद्धिदाता का प्रकाश प्रकट करने को अपने जीवन का ध्येय बना लिया।

अज्ञानी, मूढ लोगों के द्वारा संतों की आपस में तुलना की जाती है। वे तुलना करते हैं कि किस संत के कितने आश्रम हैं, शिष्य हैं। आर्थिक तुलना करना, आर्थिक आकलन करना, उनकी आय के स्रोतों को ढूँढना निरी मूर्खता ही है। यदि धर्मगुरुओं की सम्पत्ति की तुलना करनी हो तो सभी धर्मों के गुरुओं की तुलना क्यों नहीं करते? धार्मिक ट्रस्टों के पास संपत्ति न होगी तो उनके दैवी कार्यों के आवश्यक धन क्या उनको सरकार या आलोचक देंगे? संसार से विरक्त ऐसे महापुरुषों के लिए, जिनके लिए सारा संसार ही उनका अपना है, इस प्रकार का आकलन कहाँ तक उचित है? जब-जब संत-महापुरुष, ईश्वर के अवतार इस भूमंडल पर अवतरित हुए हैं, उनकी मानव कल्याणार्थ वाणी को, उनके प्रवचनों को उनके अनुयायियों ने लीपिबद्ध किया है। पूज्य बापू जी की वाणी को भी करोड़ों लोगों तक पहुँचाने के लिए 'ऋषि प्रसाद', 'लोक कल्याण सेतु', सी.डी. एवं अन्य आध्यात्मिक साहित्य द्वारा, जिनकी कीमत बहुत कम होती है ताकि आम आदमी भी उसे ले सके, साधकों द्वारा संकलित किया जाता है। 'ऋषि प्रसाद' एवं 'लोक कल्याण सेतु' पूरी तरह आध्यात्मिक सत्साहित्य है, जिसमें मानवमात्र के कल्याण हेतु स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन एवं परमात्मप्राप्ति की साधना का भी ज्ञान होता है। इसमें भारत के महान ग्रन्थों – गीता, भागवत, वेदों एवं उपनिषदों के वचनों का समावेश होता है। यह किसी भी तरह व्यवसायिक नहीं है, इसमें कोई विज्ञापन या सहातयार्थ राशी नहीं होती। क्या यह मानवता की सेवा नहीं है? इस प्रकार के दैवी कार्य को बापू जी की सम्पत्ति एवं आय का स्रोत बताकर देश की धर्मप्रिय जनता का मखौल उड़ाना कहाँ तक उचित है? अगर 'ऋषि प्रसाद', 'लोक कल्याण सेतु' के 16 लाख पाठक हैं तो इसमें किसी को क्या आपत्ति होनी चाहिए? और 5 रुपये की मासिकवाली 'ऋषि-प्रसाद' एवं 2 रुपये के 'लोक कल्याण सेतु' से 7.50 करोड़ की वार्षिक आय किस प्रकार हो सकती है? वास्तव में समाज में नैतिक मूल्यों को स्थापित करना बहुत कठिन है

और विरोध करना बहुत ही सरल, परंतु विरोध करना क्या चतुराई है? संत के दैवी कार्य की प्रशंसा करने की बजाये बेसिर-पैर की बातें करने वालों को भगवान सदबुद्धि दें।

आश्रम में बनने वाली आयुर्वैदिक दवाइयाँ, धूप अगरबत्ती, मुलतानी मिट्टीवाला साबुन आदि बहुत ही कम मूल्य पर साधक परिवार को उपलब्ध कराये जाते हैं, उनका कहीं भी बाजार में विक्रय नहीं होता है। भारतीय संस्कृति की विरोधी पत्रिकाओं द्वारा यह भ्रम फैलाना और साधकों की श्रद्धा को तोड़ने का घिनौना कृत्य करना कि इससे बापूजी को करोड़ों की आमदनी होती है, पत्रकारिता की स्वतंत्रता का दुरुपयोग है जो कि रुकना चाहिए। इस प्रकार की पत्रिकाओं द्वारा यह भी फैलाना कि बापू जी को करोड़ों रुपये सत्संगों के आयोजनों एवं गुरुपूर्णिमा उत्सव से मिलते हैं, गुरु-शिष्य परम्परा एवं इसके महान पर्व गुरुपूर्णिमा का भी घोर अपमान है। पूज्य बापू जी देश के करोड़ों लोगों में भारतीय अध्यात्म का खजाना बाँट रहे हैं। उन्होंने कभी आध्यात्मिक योग, ज्ञान या शक्तिपात की कोई फीस नहीं रखी। फिर भी उनकी आय के बारे में सोचना महामूढता का लक्षण है। वास्तव में पाश्चात्य बाजार संस्कृति की विकृत मानसिकता को भारत की धर्मप्रिय जनता कभी माफ नहीं करेगी।

3 जुलाई को रात के 8.30 बजे अमदावाद गुरुकुल से दो बच्चे भाग निकले और उनके साथ रहने वाले बच्चों से सुना गया कि 'वे कह रहे थेः हमें कार में माता-पिता लेने आने वाले हैं, हम घूमने जायेंगे। उसके एक-दो दिन पहले वे यह भी कह रहे थेः हम रथयात्रा देखने जाने वाले हैं।' तो गुरुकुल व्यवस्थापकों ने इधर-उधर खोजा नहीं मिले। 8.30 को भागे, 9.00 बजे पता चला और 9.15-9.30 बजे तक उनके परिजनों को पता कर दिया। व्यवस्थापकों की सच्चाई पर, सज्जनता पर धन्यवाद देने के बदले उन्हें बदनाम किया जा रहा है। अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए मनगढ़ंत घिनौनी कल्पनाएँ, कहानियाँ बनाकर आश्रम को बदनाम करने की साजिश करना, अलग-अलग तरीकों से वाघेला परिवार को बहकाना, प्रजा के हितैषी संत और प्रजा के बीच खाई खोदना – इससे समाज कमजोर होगा, देश कमजोर होगा। साजिशकर्ताओं को यह पता नहीं कि इससे मानवता का, सज्जनता का कितना ह्रास हो रहा है। लाखों-लाखों, करोड़ों भक्तों की भावनाओं को ठेस पहुँच रही है।

महापुरुषों के जीवन में अनेक नाट्यमय मोड़ आते हैं। उनके हजारों अनुयायी बनते हैं और अपने-अपने कर्मों की गति से उन्हें छोड़ भी जाते हैं तो क्या इससे उन महापुरुषों का कुछ बिगड़ जाता है? बापू जी के भी अनेक शिष्य अपनी मति के अनुरूप आश्रम में आये और चले भी गये, अपने कर्मों से स्कूलों-कालेजों से भी कई विद्यार्थी अभ्यास छोड़कर चले जाते हैं। **महापुरुष सदा ही मंगल चाहते हैं, वे किसी का बुरा नहीं चाहते। ऐसे आने और जाने वाले लोग महापुरुषों को पहचानने में चूक जाते हैं और जीवन के अंत में उनको पछताना पड़ता है। महापुरुषों से दूर जा वे उन पर अनेकों प्रकार के लाँछन, तोहमत लगाते हैं तो क्या महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, मीराबाई, गुरु नानक जी, भगवान श्रीराम, भगवान श्री कृष्ण पर तोहमत**

लगाने वालों को इतिहास में कहीं जगह मिली है? ऐसे लोग जन्मों तक भटकते रहते हैं। कार्यालयों, कारखानों, आश्रमों, पार्टियों, संस्थानों में लोग आते हैं और चले जाते हैं, निकाले भी जाते हैं और निकले हुए लोग बगावत में कुछ भी कह दें या आरोप लगा दें तो क्या वे सब सच्चे हो जाते हैं?

जो कुछ आज बापू जी के पास है वह उनके ट्रस्टों की सम्पत्ति है, 'रजिस्टर्ड पब्लिक ट्रस्ट' की सम्पत्ति है, जिसके वार्षिक आय-व्यय का पूरा लेखा जोखा होता है, ऑडिट होता है। बापू जी के आश्रम द्वारा स्थापित आश्रमों का उचित प्रतिफल मूल्य दिया गया है और देश के कानून के मुताबिक उनका मालिकाना हक लिया गया है, मालिकाना हक ट्रस्ट का है। अतः बापूजी और उनके अनुयायों को जमीन हड़पनेवाला बताकर बार-बार टी.वी. चैनलों पर या समाचार पत्रों में दिखाकर क्यों डराने की भ्रामक कोशिश की जा रही है? बापूजी के अनुयायियों की सहिष्णुता की क्यों परीक्षा ली जा रही है? सहिष्णुता को क्यों उत्तेजित किया जा रहा है? दिल्ली अमदावाद, सूरत, पेढ़माला, पंचेड़ तथा अन्य आश्रमों का मूल्यांकन करना, उन्हें कई करोड़ों-अरबों का बताना, इससे क्या प्रयोजन सिद्ध होने वाला है? इस देश के हजारों ट्रस्टों में हजारों आश्रम, चिकित्सालय, स्कूल-कालेज, मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे समाज-सेवा के लिए चल रहे हैं तो बापू जी के करोड़ों साधकों के सत्य-संकल्पों से बनने वाले इन आश्रमों से, जहाँ पर लाखों को शांति, सकून, आश्रय, निर्भयता, परहित-परायणता के उत्तम विचार मिलते हैं, किसी को क्यों आपत्ति होनी चाहिए?

अमदावाद में गुरुपूर्णिमा के उत्सव पर जब प्रदर्शनकारी (षडयंत्रकारी), जिनमें समाज विरोधी तत्त्व भी शामिल हो गये थे, देश भर से आने वाले साधकों को पत्थरों, लाठियों द्वारा प्रताड़ित कर रहे थे, आश्रम तक जाने ही नहीं दे रहे थे, जबरन उन्हें नग्न कर रहे थे, उनके गाड़ी-वाहनों को जला रहे थे, साधिकाओं के साथ छेड़छाड़ कर रहे थे तो क्या साधक मूक दर्शक बने रहते? और अगर भक्त आत्मरक्षार्थ खड़े हो गये तो क्या गुनाह हुआ? गुंडों से आत्मरक्षा करने वालों को गुंडा कहना कहाँ तक उचित है? मीडिया ने साधकों पर होने वाले अत्याचारों की भर्त्सना क्यों नहीं की? लाखों की भीड़ में से अगर कुछ ने अपने आपा खो दिया तो इसके लिए बापूजी और आश्रम को दोषी ठहराना कहाँ तक उचित है? वास्तव में अर्द्धसत्य को फैलाना समाज के लिए अधिक घातक सिद्ध होता है।

कोमलहृदय, सदा सबके मंगल की कामना करने वाले, लाखों लोग जिनके दर्शन के लिए घंटों पलकें बिछाये रहते हैं, उनके लिए डर, भय, हिंसा फैलाने वाला, तांत्रिक बताना, उनके लिए अनर्गल बेसिर-पैर की कहानियाँ बना-बनाकर बदनाम करना यह बापूजी के देश-विदेश में फैले करोड़ों साधकों का ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति का भी घोर अपमान है।

स्वामी श्री शिवानंद जी सरस्वती द्वारा लिखित 'गुरुभक्तियोग' जिसमें गुरु-शिष्य के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है एवं 'पंचामृत' नामक ग्रंथ जो कि सनातन संस्कृति की महान पुस्तके हैं

तथा वेदों-उपनिषदों की वाणी है, ऐसे पवित्र ग्रंथों के लिए व्यर्थ की टिप्पणी करने वाले अपनी तुच्छ मानसिकता का परिचय दे रहे हैं। किसी भी धर्मग्रंथ के लिए अंट-संट बोलना या लिखना उचित नहीं है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक को अपना धर्म पालने का मौलिक अधिकार है। अनंत काल से चल रही सनातन संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा एवं इनके संबंधों के अकाट्य तथ्यों पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लग सकता, जिसका दुस्साहस कुछ पत्रिकाओं एवं टी.वी. चैनलों द्वारा किया जा रहा है। इन अनमोल पुस्तकों को साधक का मस्तिष्क भ्रमित करने वाली बता कर भारतीय संस्कृति का घोर अपमान किया जा रहा है, प्रचार माध्यमों से इनका दुष्प्रचार किया जा रहा है, क्या यह साजिश नहीं है? जो कि निंदनीय है। संतों पर दोषारोपण करके कपोल-कल्पित आँकड़े लिखकर अपने को और समाज को पाप का भागीदार न बनायें।

कुप्रचार करने वाले जितना भी कुप्रचार करते हैं, उतने ही नये सत्संगी बनते हैं एवं दर्शनार्थी आते हैं। भगवान श्रीराम के गुरु वसिष्ठजी महाराज "श्रीयोगवासिष्ठ महारामायण" में कहते हैं कि 'संतों में यदि एक भी सदगुण हो तो उसे अंगीकार कीजिये।"

भ्रामक प्रचार से भक्तों को
बहकाया नहीं जाता।
कदम रखते हैं आगे तो
उनको लौटाया नहीं जाता।।

श्री महेश गुप्ता

(अनुक्रम)

आदत के गुलाम

एक सज्जन ने पूछाः "गाँधी जी के बारे में उनके आश्रमवासी प्यारेलाल ने जो लिखा है, क्या आप उसे जानते हैं?"

दूसराः "हाँ, मैं उसे जानता हूँ।"

पहलाः "क्या यह सब सत्य होगा?"

दूसराः "हमें उस पर विचार करने की आवश्यकता ही क्या है? जिसे अभद्रता पसन्द है, चन्द्रमा में भी कलंक देखेगा। वह चन्द्र की शीतल चाँदनी का लाभ लेने के बदले दूसरी-तीसरी बातें करेगा, क्या यह ठीक माना जायेगा?

मैंने अनेक अनुभवों के बाद यह निश्चय किया है कि जिस बरसात से फसल पैदा न हो, वह बरसात नहीं झींसी है। इस संसार में ऐसे अनेक मनुष्य हैं, जो अपनी अलभ्य चैतन्य शक्ति को इधर-उधर नष्ट कर देते हैं। ऐसे लोग अमृत को भी विष बनाकर ही पेश करते हैं।"

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'प्रभु! परम प्रकाश की ओर ले चल' से)

(अनुक्रम)

स्वास्थ्य अमृत

आयुर्वेद का अनमोल उपहार "त्रिफला"

आयुष्य को स्थिर रखने वाला आँवला, मातृवत रक्षा करने वाली हर्रें व शरीर को निर्मल करने वाला बहेड़ा – इन तीन श्रेष्ठ औषधियों के संयोग से बना त्रिफला आयुर्वेद के प्राचीन मुनियों द्वारा मानव-जाति को प्रदत्त एक अनमोल उपहार है। यह शरीर में स्थित विकृत कफ, आमदोष व मल का पाचन एवं शोधन करके शरीर को निर्मल तथा समर्थ बनाता है। बुद्धि व इन्द्रियों (विशेषतः नेत्रों) का जड़त्व नष्ट करके उन्हें कुशाग्र बनाता है। यह वार्धक्य व व्याधियों को रोकने वाला श्रेष्ठ रसायन, उत्कृष्ट जंतुनाशक (एन्टिबायोटिक व एन्टिसेप्टिक), नेत्रज्योतिवर्धक, मल निस्सारक, जठराग्नि – प्रदीपक व कफ पित्त नाशक है। संयमित आहार-विहार के साथ त्रिफला का सेवन करने वाले व्यक्तियों को हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, नेत्ररोग, पेट के विकार, मोटापा आदि होने की संभावना नहीं होती। यह 20 प्रकार के प्रमेह, विविध कुष्ठरोग, विषमज्वर व सूजन को नष्ट करता है। अस्थि, केश दाँत व पाचन-संस्थान को बलवान बनाता है। इसका नियमित सेवन शरीर को निरामय, सक्षम व फुर्तीला बनाता है।

पूज्य बापू जी भी प्रतिदिन इसका सेवन करते हैं।

चूर्ण बनाने की विधिः सूखा देशी आँवला, बड़ी हरड़ (हर्रे) व बहेड़ा लेकर गुठली निकाल दें। तीनों समभाग मिलाकर महीन पीस लें। कपड़छान कर काँच की शीशी में भरकर रखें।

औषधी-प्रयोग

नेत्र-प्रक्षालनः

एक चम्मच त्रिफला चूर्ण रात को एक कटोरी पानी मे भिगोकर रखें। सुबह कपड़े से छान कर उस पानी से आँखें धो लें। यह प्रयोग आँखों के लिए अत्यन्त हितकर है। इससे आँखें स्वच्छ व दृष्टि सूक्ष्म होती है। आँखों की जलन, लालिमा, आँखों से पानी आना तथा आँख आने पर नेत्र-प्रक्षालन से खूब फायदा होता है।

गण्डूष-धारण (कुल्ले करना)

त्रिफला रात को पानी में भिगोकर रखें। सुबह मंजन करने के बाद यह पानी मुँह में भर कर रखें। थोड़ी देर बाद निकाल दें। इससे दाँत व मसूड़े वृद्धावस्था तक मजबूत रहते हैं। कभी-कभी त्रिफला चूर्ण से मंजन करना भी लाभदायी है। गण्डूष-धारण से अरूचि, मुख की दुर्गन्ध व मुँह के छाले नष्ट हो जाते हैं।

घी (गाय का) शहद के विमिश्रण (घी अधिक व शहद कम) के साथ त्रिफला चूर्ण का सेवन आँखों के लिए वरदानस्वरूप है। संयमित आहार-विहार के साथ इसका नियमित प्रयोग करने से मोतियाबिंद, काँचबिंदु, दृष्टिदोष आदि नेत्ररोग होने की संभावना नहीं होती। वृद्धावस्था तक आँखों की रोशनी अचल रहती है।

त्रिफला के काढ़े से घाव धोने से एलोपैथिक एन्टिसैप्टिक की आवश्यकता नहीं रहती। घाव जल्दी भर जाता है।

त्रिफला के गुनगुने काढ़े में शहद मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है।

मूत्रसंबंधी सभी विकारों व मधुमेह (डायबिटिज) में त्रिफला का सेवन बहुत लाभदायी है।

रात को गुनगुने पानी के साथ त्रिफला लेने से कब्जियत नहीं रहती।

मात्राः 2 से 4 ग्राम चूर्ण दोपहर को भोजन के बाद अथवा रात को गुनगुने पानी के साथ लें। रात को न लें सकें तो सुबह जल्दी भी ले सकते हैं।

सावधानीः दुर्बल, कृश व्यक्ति तथा गर्भवती स्त्री को एवं नवज्वर (नये बुखार) में त्रिफला का सेवन नहीं करना चाहिए।

यदि दूध का सेवन करना हो तो दूध व त्रिफला के सेवन के बीच 2 घंटे का अन्तर रखें।

त्रिदोषशामक एवं प्रकोपक

फलों में खजूर, आँवला, हरड़ (हर्रे), पका देशी आम, मीठा अनार, मीठे अंगूर, पका पपीता, पकी इमली त्रिदोषशामक हैं। कच्चा आम व खट्टे अनार त्रिदोषप्रकोपक हैं।

(अनुक्रम)

'नीम तेल' के बारे में किये जा रहे कुप्रचार का भंडाफोड़

आश्रम के सेवाकेन्द्रों पर मिलने वाला 'नीम तेल' पीने से पुणे (महा.) के एक बच्चे को पेरेलिसीस हो गया – ऐसा कुप्रचार किया जा रहा है। वास्तव में दो वर्ष पूर्व जब ऐसी फरियाद की गयी थी, तभी 'फूड एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन' विभाग के आला अधिकारियों ने लेबोरेटरी में तेल की जाँच की थी एवं इसे पूर्णरूप से निर्दोष पाया था। जिसका शासकीय प्रमाणपत्र निम्नानुसार हैः

शासकीय विश्लेषक द्वारा परीक्षण या विश्लेषण का प्रमाणपत्र

('ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940' की धारा 33 – एच के अन्तर्गत)

निरीक्षक का नामः श्री पी.एम. पाटील, फूड एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन, पुणे, महाराष्ट्र।

दिनांकः 23 जून 2006.

सेम्पल का नामः नीम तेल

सेम्पल में विष नहीं पाया गया।

स्किन इरिटेशन टेस्ट में सफल।

सेम्पल में स्टीरॉईड्स नहीं पाये गये।

सेम्पल में नीम तेल ही पाया गया।

विष परीक्षण परिणामः टॉक्ससिटी टेस्ट के नियमानुसार यह नमूना निर्विष पाया गया।

स्किन इरिटेशन टेस्ट का परिणामः IS: 40:1:1997 के अनुसार स्किन इरिटेशन परीक्षण में निर्दोष पाया गया।

(इससे कुप्रचार का भंडा फोड़ हो जाता है एवं यह सिद्ध होता है कि यह आश्रम को बदनाम करने की साजिश ही है।)

(अनुक्रम)

मेरा दृढ़ विश्वास है – वह अच्छे संस्कारी कुल में फिर से आयेगा

मैं सन् 2001 से पूनम व्रतधारी हूँ। पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से मेरे गृहस्थी जीवन में नित्य सुख-शांति है। मैंने अपने बच्चे रामकृष्ण यादव को छिन्दवाड़ा गुरुकुल में सन् 2008 में दाखिल कराया क्योंकि रामकृष्ण बापू जी का दिया हुआ प्रसाद था और मैं चाहता था कि बापू जी की सेवा, समाज की सेवा में अपने बच्चे को अर्पण करूँ। 29 जुलाई 2008 को अकस्मात् रामकृष्ण देवलोक वासी हो गया।

मुझे इस बात का दुःख नहीं है कि रामकृष्ण चला गया लेकिन इस बात की खुशी है कि उसे पूज्य बापू जी के गुरुकुल में भक्ति, योग व ज्ञान के संस्कार मिले और आत्मा तो अजर-अमर है। इस जीवन के संस्कारों से उसकी यात्रा दिव्य होगी और वह अच्छे संस्कारी, ऊँचे कुल में फिर से आयेगा, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। मेरा दूसरा बच्चा शिवम् जो कि 2 वर्ष का है, उसे भी मैं बापूजी के गुरुकुल में ही पढ़ाऊँगा।

मोहनलाल द्वारिकाप्रसाद यादव

शांति नगर, रूम नं – 16

ए.एस.पी. रोड, वडाला पूर्व, मुंबई – 37

(अनुक्रम)

ये घटनाएँ बापू जी और आश्रम के खिलाफ साजिश हैं

छिन्दवाड़ा गुरुकुल के दिवंगत बालक वेदांत की माँ पूजा और पिता कृष्णा ने कहा कि हमें आश्रम पर आज भी उतना ही भरोसा है। हमारी बेटी वेदांती भी आश्रम के गुरुकुल में पढ़ती है और आगे भी यहीं पढ़ेगी। अगर हमारे और भी बच्चे होते तो उन्हे भी गुरुकुल में पढ़ाते।

यह बात साफ है कि ये घटनाएँ बापू जी और आश्रम के खिलाफ साजिश हैं।

(अनुक्रम)

प्रार्थनाष्टक

है प्रार्थना गुरुदेव से, यह स्वर्गसम संसार हो।
अति उच्चतम जीवन बने, परमार्थमय व्यवहार हो।।
न हम रहें अपने लिए, हमको सभी से गर्ज है।
गुरुदेव ! यह आशीष दें, जो सोचने का फर्ज है।।
हम हों पुजारी तत्व के, गुरुदेव के आदेश के।
सच प्रेम के, नित नेम के, सद्धर्म के सत्कर्म के।।
हो चीढ़ झूठी राह की, अन्याय की अभिमान की।
सेवा करन को दास की, पर्वा नहीं हो जान की।।
छोटे न हों हम बुद्धि से, हों विश्वमय से ईशमय।
हों राममय अरु कृष्णमय, जगदेवमय जगदीशमय।।
हर इन्द्रियों पर ताब कर, हम वीर हों अति धीर हों।
उज्जवल रहे सर से सदा, निजधर्मरत खंबीर हों।।
यह डर सभी जाता रहे, मन-बुद्धि का इस देह का।
निर्भय रहें हम कर्म में, परदा खुला कर स्नेह का।।
गाते रहें प्रभू-नाम पर, प्रभू-तत्व पान के लिए।
हो ब्रह्मविद्या का उदय, यह जी तराने के लिए।।
अति शुद्ध हो आचार से, तन-मन हमारा सर्वदा।
अध्यात्म की शक्ति हमें, पल भी नहीं कर दे जुदा।।
इस अमर आत्मा का हमें, हर श्वास भर में गम रहे।
गर मौत भी हो आ गयी, सुख-दुःख हममें सम रहे।।
गुरुदेव ! तेरी अमर ज्योति का हमें निज ज्ञान हो।

सतज्ञान ही तू है सदा, यह विश्वभर में ध्यान हो।।
तुझमें नहीं हैं पंथ भी, ना जात ना देश भी।
तू है निरामय एकरस, है व्याप्त भी अरु शेष भी।।
गुण-धर्म दुनिया में बड़े, हर जीव से कर्तव्य हो।
गंभीर हों सबके हृदय, सच ज्ञान का वक्तव्य हो।।
यह दूर हो सब भावना, 'हम नीच हैं अस्पृश्य हैं'।
हर जीव का हो शुद्ध मन, जब कर्म उनके स्पृश्य हैं।।
हम भिन्न हों इस देह से, पर तत्व में सब एक हों।
हो ज्ञान सब में एक ही, जिससे मनुज निःशंक हो।।
तुकड्या कहे ऐसा अमरपद, प्राप्त हो संसार में।
छोडें नहीं घरबार पर, हों मस्त गुरु चरणार में।।

वं. राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज

(अनुक्रम)

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

12 जून का दिन **जम्मू काश्मीर** राज्य के लिए एक ऐतिहासिक दिवस रहा। इस दिन **कठुआ, धमयाल, तपयाल, कूटा, रामगढ़,** तथा **साम्बा** में सत्संग-अमृत की वर्षा बरसाते हुए अंत में जम्मू के भगवती नगर स्थित आश्रम में पूज्यश्री का पदार्पण हुआ। पूज्यश्री के आश्रम परिसर में पहुँचते ही दीपमालिकाओं के बीच भव्यता से स्वागत हुआ।

मंदिरों के शहर जम्मू में देवी देवताओं की मूर्तियों में श्रद्धा तो जगह-जगह देखने को मिलती ही है, लेकिन जाग्रत महापुरुषों में श्रद्धा-भक्ति का हजूम भी इन सत्संग-कार्यक्रमों में देखने को मिला। सभी के हृदयों के तार बापू जी के ही संगीत गाते नजर आये।

सत्संग-कार्यक्रम में पहला सत्र विद्यार्थियों के नाम रहा। पूज्य श्री ने विद्यार्थियों को बुद्धिशक्ति बढाने वा मस्तिष्क की अविकसित 22 शक्तियों को जगाने की युक्तियाँ बतायीं।

विद्यार्थी सत्र के अंत में विद्यार्थियों ने 'हे प्रभु ! आनन्ददाता !....' व 'यह शरीर मंदिर है प्रभु का.....' इन भजनों पर भाव-भंगिमाओं से अलंकृत नृत्य प्रस्तुत किया।

इन्द्रदेव भी सेवा करते नज़र आयेः इस महा दैवी कार्य में एक ओर कई पुण्यात्मा तन-मन से लगे थे तो दूसरी ओर देवराज इंद्र भी तीनों दिन रात्रि को वर्षा कर तेज गर्मी को शांत करने की सेवा करते नज़र आये।

पूर्णिमा दर्शन कार्यक्रम **दिल्ली** एवं **अमदाबाद** में सम्पन्न हुआ। पूर्णिमा दर्शन करने आये व्रतधारियों एवं स्थानीय सत्संगियों ने दिल्ली को विवेक विहार मैदान को नन्हा कर दिया। ग्रीष्म ऋतु की कड़ी तपन और घर-घर में टी.वी. पर जीवंत प्रसारण होने के बावजूद ब्रह्मवेत्ता संतश्री के दर्शन तथा उनकी अमृतवाणी के रसपान के लिए उमड़ा हुजूम यह साबित करता है कि समाज में अपने सच्चें हित, वास्तविक मंगल की प्यास अभी भी जागृत है।

गोरख जागता नर सेविए।

जो अपने आत्मा में जगे हैं ऐसे बापू जी के दर्शन जीवंत प्रसारण से घर में तो हो रहे थे फिर भी नजदीक से दर्शन करने विवेक विहार मैदान में उमड़े दिल्ली के दिलबरों ने साबित कर दिखाया कि बापूजी हमारे प्यारे हैं, आँखों के तारे हैं।

गुरुपूर्णिमा विशेष

सभी पर्वों का अपना-अपना स्थान है, जैसे कि 'जन्माष्टमी' भगवान श्रीकृष्ण की याद दिलाती है, 'रामनवमी' भगवान श्री राम की याद दिलाती है, 'गणेष चतुर्थी' भगवान श्रीगणेषजी की याद दिलाती है। सभी देवी-देवताओं का अपना-अपना पर्व है लेकिन यह 'गुरु पूर्णिमा' वैदिक संस्कृति का ऊँचे-में-ऊँचा पर्व है, जो हमें संदेश देता है कि 'हे शिष्य ! तू लघुता से गुरुता की ओर बढ़, असत् से सत् की ओर बढ़, दुःख से निकलकर परम आनंद को पा व सच्चिदानंद के साथ हाथ-से-हाथ मिलाकर चल।' ऐसा यह गुरुपूर्णिमा पर्व है। और सब पर्वों को तो तुम मनाते हो लेकिन यह गुरु पूर्णिमा पर्व तो तुम्हें ही मनाता है।

सच्चे शिष्यों की श्रद्धा को निंदक नहीं तोड़ सकते क्योंकि सच्चा शिष्य गुरु-सान्निध्य में अपने को हुए आत्मानंद, आत्मशांति के अनुभव का आदर करता है। वह जानता है कि गुरु के पास कैसा प्रसाद है। तभी तो गुरुपूर्णिमा पर्व पर उस प्रसाद को पाने के लिए लम्बी-लम्बी कतारों में भूख प्यास की परवाह किये बिना शिष्य अपने गुरु की एक झलक पाने को बेताब रहता है।

इन्दौर (म.प्र.), 28 व 29 जून 2008 – गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आरम्भ इंदौर के दशहरा मैदान से हुआ। लाखों-लाखों गुरुभक्तों ने अपनी श्रद्धा की डोर गुरुज्ञान से जोड़ी। यहाँ गुरु के दीवाने कभी भगवद्ध्यान में, कभी नाम जप में, कभी भगवद् विश्रांति में तो कभी गूढ आत्मविचार के सत्संग में तन्मय पाये गये।

भोपाल (म.प्र.), 1 व 2 जुलाई 2008- गुरुपूर्णिमा का दूसरा चरण रहा मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में। पूज्य बापू जी का अभिनंदन करते हुए म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि "हमारी गद्दी तो अस्थायी है। जितना समय रहें, कुछ कर जायें यही इच्छा है। मैं सी.एम. बना तो विरोधियों ने कहाः "कभी मंत्री नहीं बना, सीधे मुख्यमंत्री बना है, चल नहीं पायेगा', पर आपके आशीर्वाद से हम निरंतर कार्य कर रहे हैं। बचपन से ही अध्यात्म में रूचि है, इसलिए सत्संग सुनने अवश्य जाता हूँ। नेता न होता तो शायद अध्यात्म से और अधिक जुड़ा होता।"

चिरादरणीय पूज्य बापू जी का आशीर्वाद पाकर धन्य हुए श्री शिवराज चौहान ! ऐसे मुख्यमंत्री जिस प्रदेश को मिले हैं वह प्रदेश भाग्यशाली है। शोषण कर विदेशों में सम्पत्ति रखने से प्रजा की सेवा नहीं होती अपित सच्चे हृदय से, ईमानदारी से कार्य करने से प्रजा की सेवा होती है। इस प्रकार सेवा करने वाले सभी कर्मचारी एवं साधक स्वभाव राजनेता धन्य हैं और प्रजा का सौभाग्य है।

नागपुर (महा.) 4 से 6 जुलाई 2008 – यहाँ एक ओर तो रेशिम बाग मैदान के विशाल प्रांगण में कुंभ पर्व-सा दृश्य उपस्थित हुआ तो दूसरी ओर सारा नागपुर शहर बापूमय नजर आया।

कुछ निराले अंदाज में रहा गुरुपूनम का प्रसाद नगरवासियों के लिए। शरीर से वीरता, मन से धीरता और बुद्धि से गम्भीरता धारण करने वाला अर्थात् शरीर से स्वस्थ, मन से प्रसन्न और बुद्धि से आत्मा में शांत व्यक्ति सदगुरु-प्रसाद को पाने का अधिकारी हो जाता है।

आलंदी-पुणे (महा.) 8 व 9 जुलाई 2008 – संत ज्ञानेश्वर जी महाराज की तपःस्थली आलंदी में गुरुज्ञान, भक्ति व प्रेम की धारा प्रवाहित हुई। लाखों भक्तों ने आध्यात्मिक रस का पान किया। सभी पूज्य बापू जी के निकट से दर्शन करने आ सकें यह तो संभव नहीं था लेकिन मनोवांछा-कल्पतरू पूज्य बापू जी ही शिष्यों के बीच दर्शन देने हेतु पहुँचे। वचनामृत का पान करते-करते व निकट से दर्शन पाकर सभी के नयनामृत बरसने लगे। सभी छक गये, सभी मन-मति से चुप होकर गुरु-प्रसाद पाने लगे। धन्य हुए आलंदी वासी ! धन्य हुई वसुन्धरा !

दिल्ली (रोहिणी), 12 व 13 जुलाई 2008 – राजधानी दिल्ली के विशाल जापानी पार्क मैदान को भी नन्हा कर दिया बापू जी के प्यारों ने। एक तरफ जहाँ लाखों-लाखों भक्त-साधक पंडाल में शांत चित्त होकर गुरु प्रसाद पाते दिखे, वही दूसरी ओर भारत भर के करोड़ों साधक शिष्यों ने घर बैठे जीवंत प्रसारण के माध्यम से इस सत्संग अमृत का पान किया।

जयपुर (राज.) 15 व 16 जुलाई 2008 दोपहर तकः यहाँ हुए दो दिवसीय गुरुपूर्णिमा महोत्सव में पूज्य बापू जी का दर्शन-सत्संग पाकर आध्यात्मिक ज्ञानांजन लगाने राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधराराजे सिंधिया भी पधारीं। उन्होंने कहाः "आज प्रदेश उन्नति की ओर बढ़ रहा है, वह संत महात्माओं के आगमन से ही है। अकेला मनुष्य कुछ नहीं कर सकता, संतों का साथ जरूरी है। मैं आज जो कुछ हूँ, ईश्वर की कृपा एवं संत-महात्माओं के आशीर्वाद से ही बनी हूँ। संतों का आशीर्वाद कभी विफल नहीं हो सकता।

यहाँ जयपुर गुरुकुल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी के चित्त को आनंदित किया।

अमदावाद (गुज.), 18 से 20 जुलाई 2008 – कई दिनों से चल रहे भ्रामक प्रचार व उत्पाती तत्त्वों द्वारा हुए अत्याचारों के बावजूद भी लाखों भक्तों ने गुरु-दर्शन एवं सत्संग का लाभ लिया।

पूज्यश्री ने मधुर प्रसाद के साथ हरड़ रसायन की गोलियाँ भी बटवायीं, ताकि भक्तों का स्वस्थ्य भी उत्तम रहे। पूज्य बापू जी ने सत्संग में कहाः "अपने देश की प्राचीन वैदिक संस्कृति ने हर बार विश्व-मानव का सर्व प्रकार से मंगल ही चाहा है। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' यह अपनी ही संस्कृति का दैवी संस्कार है। मैं चाहता हूँ कि आज का गुरुपूर्णिमा उत्सव विश्व-मानव के सर्वांगीण कल्याण का पथदर्शक बने और आज का भारत फिर से प्राचीन संस्कृति की दैवी गरिमा से सम्पन्न बने। हम सब परस्पर सदभाव, परस्पर मदद, सर्व-मांगल्य और दूसरों के दुःख में सहभागी हों। विश्व-मानव सुखी सम्मानित और स्वस्थ जीवन जीये ऐसी भावना करें।"

(अनुक्रम)

संत श्री आसाराम जी आश्रम द्वारा किये जा रहे सेवाकार्यों की एक झलक

वर्तमान में भारत जिन महापुरुषों की पुनीत पदरेणु से पावन हो रहा है वे हैं लोक-लाडले, आत्मरामी, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ संत श्री आसारामजी बापू। अमदावाद में साबरमती नदी के तट पर सन् 1972 में स्थापित 'मोक्ष कुटीर' आज 'संत श्री आसाराम आश्रम' के नाम से एक प्रेरणातीर्थ बन चुका है। पूज्य बापू जी के प्रेरक मार्गदर्शन में लोक कल्याण के उद्देश्य से चलायी जा रही विभिन्न सत्प्रवृत्तियों पर एक नजरः

विश्वशांति के प्रसारक, आध्यात्मिक स्पंदनों से समृद्ध स्थल 'संत श्री आसाराम जी आश्रम' देश के विभिन्न स्थानों में आश्रमों की स्थापना हो चुकी है। विदेशों में मेटावन, वॉशिंग्टन (अमेरिका), टोरंटो (कनाडा) आदि स्थानों में सत्संग-केन्द्र हैं।

श्री योग वेदांत सेवा समितियाँ आश्रम द्वारा संचालित लगभग 1275 सेवा समितियाँ समाज के हर वर्ग के हित में विभिन्न सेवाओं में रत हैं।

सत्संग कार्यक्रमों द्वारा जनजागृति पूज्य बापू जी एवं बापू जी के कृपापात्र शिष्यों के सत्संग-कार्यक्रम देश के विभिन्न शहरों, गाँवो व विद्यालयों में अविरत जारी रहते हैं। जिनके माध्यम से समाज में सदविचारों व संस्कारों का प्रचार होता है।

इन सत्संग-कार्यक्रमों में आज लाखों लोग प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाओं व स्वास्थ्यप्रद युक्तियों द्वारा असाध्य रोगों से मुक्ति पा रहे हैं। यहाँ उन्हें उच्चतम नैतिक-धार्मिक मूल्यों व वेदांत के पावन ज्ञान को दैनिक जीवन में उतारकर सुशमय एवं सफल जीवन जीने की कला सिखायी जाती है। इसके साथ उन्हें भक्ति योग, कर्मयोग व ज्ञानयोग के समन्वय द्वारा जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य आत्मज्ञान को पाने की कुंजियाँ प्राप्त हो रही हैं।

ध्यानयोग शिविरः लाखों लोग पूज्य बापू जी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले 'ध्यान योग शिविरों' कुंडलिनी योग व ध्यान योग साधना द्वारा अपनी सुषुप्त शक्तियों को जागृत करते हैं ध्यान के द्वारा तनाव व विकारों से छुटकारा पाकर शांति, आनंद प्राप्त करते हैं।

विद्यार्थी उत्थान शिविरः विद्यार्थी अवस्था मानव जीवन की नींव है। इसे मजबूत बनाने हेतु बापू जी के सान्निध्य में 'विद्यार्थी उत्थान शिविरों' का आयोजन किया जाता है। इनमें विद्यार्थियों को यौगिक क्रियाओं, योगासन, ध्यान आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे अपनी सुषुप्त शक्तियों का विकास कर लक्ष्यनिष्ठ, प्रबल संकल्पशक्तियुक्त तथा विवेकसंपन्न बनें। आज के ये बालक ही कल के अच्छे नागरिक बन माता-पिता, गुरुजन व देश का नाम रोशन करेंगे।

दीक्षित शिष्यों द्वारा व्यापक जनसेवाः विश्वभर में बापू जी से मंत्रदीक्षित शिष्यों की संख्या करोड़ों में है, जो आत्मोन्नति के साथ-साथ समाज-हित के विभिन्न कार्यों में संलग्न है।

चैनलों व केबल टी.वी. द्वारा सत्संग-प्रसारणः आस्था, आस्था इंटरनैशनल, संस्कार – इन टी.वी. चैनलों तथा सिटी केबलों द्वारा पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन प्रसारित किये जाते हैं।

सत्साहित्य व मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशनः आश्रम द्वारा 14 भाषाओं में 345 पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। मासिक पत्रिका 'ऋषि प्रसाद' हिन्दी, मराठी, गुजराती, उड़िया, तेलगू व अंग्रजी भाषाओं में और मासिक पत्रिका 'दरवेश दर्शन' सिंधी भाषा में प्रकाशित की जा रही है। मासिक समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु' हिन्दी, मराठी व गुजराती भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। 'ऋषि प्रसाद' की 17 लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित होती हैं।

बाल संस्कार केन्द्रः आश्रम के 17500 से अधिक 'बाल संस्कार केन्द्र' विद्यार्थियों में सुसंस्कार सिंचन के दैवी कार्य में रत हैं।

युवाधन सुरक्षा अभियानः विद्यार्थियों, युवाओं व जनसामान्य में लाखों की संख्या में 'युवाधन-सुरक्षा' (दिव्य प्रेरणा-प्रकाश) पुस्तकें बाँटी गयी हैं, साथ ही हजारों युवा उत्थान कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं। युवाधन सुरक्षा अभियान से युवानों में नवचेतना आयी है।

मौन मंदिरः करीब 140 आश्रमों में मौन मंदिर की व्यवस्था है, जिसमें साधक 7 दिन का मौनव्रत लेकर दिव्य आध्यात्मिक अनुभूतियों का अनुभव करते हैं।

आदिवासी, वनवासी व पिछड़े लोगों का विकासः 'वनवासी उत्थान केन्द्रों' द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में विशेष सेवा जैसे नियमित निःशुल्क अनाज-वितरण, भंडारों (भोजन-प्रसाद वितरण) के अलावा समय-समय पर बापू जी द्वारा वनवासियों को अन्न, वस्त्र, बर्तन, बच्चों को नोटबुकें, मिठाइयाँ आदि के वितरण व भंडारे के साथ नकद दक्षिणा देने का कार्य बड़े पैमाने पर होता है। पिछड़े क्षेत्रों में कीर्तन व भंडारों का नियमित आयोजन आश्रम के सेवाकार्यों का एक मुख्य अंग बन चुका है। आज तक हजारों भंडारों द्वारा लाखों-लाखों दीन, अनाथ, गरीब, आदिवासी लाभान्वित हो चुके हैं।

अनाथालयों में सेवाकार्यः अनाथालयों में जाकर जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण किया जाता है।

राशनकार्डों द्वारा अनाज आदि का वितरणः गरीबों, अनाश्रितों व विधवाओं के लिए आश्रम द्वारा हजारों राशनकार्ड वितरित किय गये हैं, जिनके माध्यम से उन्हें हर माह अनाज व जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण किया जाता है।

छाछ वितरण व जल प्याऊ सेवाः बस स्टैंडों, रेलवे स्टेशनों, सार्वजनिक स्थलों पर शीतल छाछ व जल की प्याऊ लगायी जाती है तथा इनका निःशुल्क वितरण किया जाता है।

'भजन करो, भोजन करो, रोजी पाओ' योजनाः आश्रम-संचालित इस योजना के अंतर्गत जिनके पास आय का साधन नहीं है या जो नौकरी धंधा करने में सक्षम नहीं हैं उन्हें सुबह से शाम तक जप, कीर्तन, सत्संग का लाभ देकर भोजन और रोजी दी जाती है ताकि गरीबी, बेरोजगारी घटे, साथ ही जप-कीर्तन से वातावरण की शुद्धि हो।

निःशुल्क नेत्रबिन्दू व वास्तुदोष निवारक वितरणः आयुर्वैदिक नेत्रबिन्दू तथा सुख-शांतिवर्धक ग्रह एवं वास्तुदोष निवारक का वितरण निःशुल्क प्रसादी के रूप में किया जाता है।

प्राकृतिक प्रकोप व आपातकालीन सेवाः देश पर आयी प्राकृतिक आपदाओं में आश्रम की सेवाएँ और तत्परता हमेशा अग्रणीय स्थान पर रही हैं। चाहे लातूर, भुज के भूकंप हों या गुजरात का अकाल, उड़ीसा व गुजरात में आयी बाढ़ हो या सुनामी महातांडव – सभी जगह आश्रम द्वारा निरंतर सेवाएँ हुई हैं।

गौ-सेवाः आश्रम द्वारा 9 बड़ी गौशालाओं का संचालन हो रहा है, जिनमें कत्लखाने ले जाने से रोकी गयीं हजारों गायों की सेवा की जा रही है। मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट आदि राज्यों में गौशालाएँ चलाई जा रही हैं।

व्यसन मुक्ति अभियानः आज आश्रम द्वारा चलाये जा रहे 'व्यसन मुक्ति अभियान' से बड़ी संख्या में व्यसनी लोग व्यसनमुक्त हो रहे हैं।

विद्यार्थी उज्जवल भविष्य निर्माण शिविरः विद्यार्थियों की छुट्टियों का सदुपयोग कर उन्हें संस्कारवान, बुद्धिमान, उद्यमी, परोपकारी बनाने हेतु शुरु किये गये ये शिविर विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों द्वारा खूब सराहे गये हैं। इन शिविरों में विद्यार्थियों को यौगिक शिक्षा, आदर्श दिनचर्या, आदर्श विद्यार्थी कैसे बनें, परीक्षा में अच्छे अंक कैसे प्राप्त करें – जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर उत्तम मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

अभावग्रस्त विद्यार्थियोको मददः गरीब, अनाथ, असहाय विद्यार्थियों में नोटबुकें, पाठ्य पुस्तकें, गणवेश आदि का निःशुल्क वितरण किया जाता है। विद्यार्थियों के लिए विशेष नोटबुकों का निर्माण किया जाता है, जिनमें नैतिक शिक्षाप्रद सुवाक्य-चित्र, प्रेरक-प्रसंग, स्मरणशक्ति के विकास के उपाय व सफलता की कुंजियाँ दी जाती हैं।

ग्रामीण व आदिवासी पाठशालाओं में बिछात, डेस्क, कुर्सियाँ आदि भी प्रदान किये जाते हैं।

योग-प्रशिक्षणः साधक-साधिकाओं द्वारा विभिन्न विद्यालयों में ध्यान-साधना, स्मृतिवर्धक प्रयोग आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

आध्यात्मिक ज्ञान प्रतियोगिताः सन् 2002 तथा 2003 में आश्रम द्वारा इस देशव्यापी प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता में 532799 बच्चों ने भाग लिया, जिसमें 189671 बच्चे उत्तीर्ण हुए और 3595 बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ – वातावरण में सात्त्विकता, पवित्रता लाने तथा वैचारिक प्रदूषण दूर करने हेतू भारत भर में हरिनाम संकीर्तन यात्राओं व प्रभातफेरियों का आयोजन किया जाता है, जिनके दौरान सत्साहित्य-वितरण भी किया जाता है।

चिकित्सा सेवाः आयुर्वैदिक, होमियोपैथिक, प्राकृतिक चिकित्सा व एक्युप्रैशर – इन निर्दोष चिकित्सा पद्धतियों से निष्णात वैद्यों द्वारा विभिन्न स्थानों में उपचार किये जाते हैं, साथ ही देश के सुदूर क्षेत्रों में निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है। आदिवासी व ग्रामीण क्षेत्रों जहाँ आसानी से चिकित्सा-सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती, वहाँ भी सेवा के लिए आश्रम के चल-चिकित्सालय पहुँच जाते हैं।

अस्पतालों में सेवाः मरीजों में फल, दूध, दवाएँ व सत्साहित्य का वितरण किया जाता है।

बड़ या पीपल बादशाहः लोगों की सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लोकसंत बापूजी द्वारा शक्तिपात किया गया एक बड़ या पीपल का वृक्ष प्रायः हर आश्रम में विद्यमान है। भक्तजन इन्हें बड़ या पीपल बादशाह कहकर सम्बोधित करते हैं। आज ये मनोकामना-पूर्ति के सिद्ध स्थल बने हैं।

सत्साहित्य केन्द्रः समाज के गरीब से गरीब हर वर्ग के व्यक्ति को घर बैठे जीवनोद्धारक आध्यात्मिक मूल्यों का लाभ मिल सके इस उद्देश्य से देश भर में सत्साहित्य-वितरण के लिए स्थायी व चलित केन्द चलाये जा रहे हैं, जहाँ से अत्यल्प मूल्य में सत्साहित्य प्रदान किया जाता है।

विडियो सत्संग केन्द्रः विभिन्न स्थानों में विडियो सत्संग केन्द्रों के माध्यम से पूज्य श्री की अमृतवाणी का लाभ लोगों को दिया जा रहा है।

जेलों में कैदी उत्थान सेवाः कैदियों के सर्वांगीण उत्थान हेतु पूरे भारतवर्ष में 446 जेलों में निःशुल्क सत्साहित्य-वितरण व सत्संग कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अब तक 280000 बन्दियों को लाभ मिल चुका है। उन्हें भगवन्नाम-लेखन पुस्तिका दी गयी है ताकि वे फुरसत के समय का सदुपयोग कर भगवन्नामलेखन कर सकें। जेल के पुस्तकालय में आश्रम द्वारा प्रकाशित 73 किताबों का सेट व पूज्य श्री के सत्संग की सी.डी. कैसेट भीदी जाती है.

वातावरण व विचारों की शुद्धिः इस हेतु महामृत्युंजय यज्ञ आदि का आयोजन होता है।

पदयात्राएँ – नैतिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार व व्यसन मुक्ति हेतु चेतना जगाने के लिए समय-समय पर पदयात्राएँ निकाली जाती हैं। जम्मू काश्मीर से कन्याकुमारी तक भी यात्रा निकाली गयी थी।

(अनुक्रम)